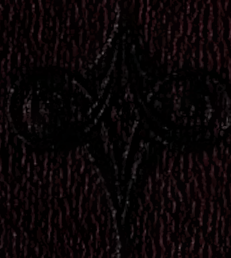


HINDI HYMN BOOK

Hindi acc to Julian 747 is
the language of some N &
NW provinces of India
Allied to the Sanscrit whose
Square characters it uses.
There is also another language
spoken called Urdu or
Hindostani common in large
cities & used by Mohammedans.
It employs Persian Script
Characters

गीतमाला ।

HINDI HYMN BOOK

Compiled and published for

THE CANADIAN MISSION

BY JOHN MORTON. D. D.

2nd Edition 4000 Copies.

Printed at the Canadian Mission
Press Tunapuna Trinidad 1912.

Price 18 cts. दाम १८ कापर

भूमिका ॥

प्रगट हो कि अबकी बार यह पुस्तक बड़ी सावधानीके साथ पादरी जान मार्टन और पादरी आन्द्रिय गयादीन के द्वारासे शुद्ध करके छापी गई है। यदि कहीं २ गलत हो गया है तो अक्षरके टूटने से या गिर जाने से हुआ है तद भी सुधारा गया। किन्तु कहीं पर चूक रह गया हो तो पाठकगण कृपा करके क्षमा करें॥

कनेडियन मिशन के छापा खाना में
छापी गई तानापूना में।

१ पहिली गीत ॥

१ गीत ॥

जगतार कृत हम गावें · अकथ गुण तेरो मानि के ॥
मातु उदर में देह बनायो · अद्भुत यन्तर न्यारी ।
बूझि पड़े नहीं एको मर्मा · अकल देत नहि यारी ॥ १
होहि दिवाकर दिन प्रगासा · ललित उगे निशि चन्दा ।
शासन पूरहिं षट ऋतु आए · सकल सुखारथ बन्दा ॥ २
अंडज पिंडज उष्मज जेते · सर्व भूमि को छाये ।
लेखक लेखि रहे युग चारों · अन्त न ताको पाये ॥ ३
कर्त्ता स्वामी सबके तुमही · तेरो शक्ति अशेखा ।
जीव चराचर जे जगमाहीं · अचरज रहित न देखा ॥ ४
जगत पिता तुम दीनदयाला · तात न निज हम जाना ।
क्षमा करो अपराध हमारे · जान अधम पछताना ॥

२

जय जय परमदयामय स्वामी · सुमरण गान करोरे ॥
बिजली पवन मेघ बश जाको · और सिन्धु हिलकोरे ।
दिन दिन नर तसु प्रेम सराहो · सांझ पहर अरु भोरे ॥ १
भक्त समाज निरन्तर ताको · भजो सहित अनुरागे ।
ईश्वर गुण अह्लादित गावो · प्रेम सुखद रस पागे ॥ २
ईश्वर कृत तन जीव हमारा · अद्भुत कर्म अनूपा ।
अन्न नीर दाता प्रतिपालक · धन्य दयायुत भूपा ॥ ३
करहु सकल जग तिहि परशंसा · शुभ सुर शब्द उठाई ।
आश्रित गान बिशेषित टेरो · मनही मन हर्षाई ॥ ४

३ गीत ॥

या रब तेरी जनाब में हर्गिज़ कमी नहीं ।
तुझसा जहान के बीच तो कोई गनी नहीं ॥
जो कुछ कि खूबियां हैं सो तेरीही ज़ातमें।
तेरे सिवाए और तो कोई धनी नहीं ॥ २
आसीकी अर्ज़ तुझसे है तू सुन ले ऐ गनी।
अपने फज़्लके गंज़से तू कर मुझे धनी ॥ ३

४

We praise thee O God.

१ हम्द तेरी ऐ बाप तू ने बखशा हम को।
मसीह को कि मुंजी सब दुनिया का हो ॥

कोरस।

हल्लिलूयाह तेरी हम्द हो हल्लिलूयाह आमीन
हल्लिलूयाह तेरी हम्द हो फिर हम को जिला

२ हम्द तेरी मसीह कि तू हुआ इन्सान।
सलीब पर जान देके फिर गया आस्मान ॥

३ हम्द तेरी पाक रूह अपनी रोश्नी चमका।
कर ज़ाहिर मसीह को हिदायत फरमा ॥

४ तअ़रीफ हो हम्द ऐ रहीम औ रहमान ।
तू हमको खरीद करके बखशता आस्मान ॥

५ फिर हमको जिला अपना प्यार दिलमें भर।
और हर एक की जानको मुहब्बत तू कर॥

६ फिर हमको जिला सबको मौतसे जिला।
और सब खोये हुये अब घर में फिर ला ॥

५ गीत ॥

पिता पूत और धरमआत्मा
तीनमें एक और एक में तीन।
तारण करने का महात्मा
प्रगट होगा हो आमीन ॥

६

गणक गण पूजन आये जगराई ॥

पूर्व दिशातें पूछत आये · नक्षत्र के अनुजाई।
यिहुदन के भूपाला कौने · कहाँ जन्मकी ठांई ॥ १
जो तारा देख्यो दिग पूरब · सोइ चले अगुआई।
थकित भये आये गृह ऊपर · जन्म यीशु जहं पाई ॥ २
निरखि तारा भूरि हर्षाने · जिमि लोभी धन पाई।
समीप आये दंडवत कीन्हा · दर्शहि नयन जुड़ाई ॥ ३
कुन्दर अगुर धूप विधि नाना · सोना रूप चढ़ाई।
जयति मनावत देश सिधाये · धन्य भाग अपनाई ॥ ४
जय जय जय सब आश्रित गाओ · हुलसि हुलसि सिर नाई।
जान अधम तुम धरु बिश्वासा · तुमहु दर्शन पाई ॥ ५

७

तारक यीशु अपार दयानिधि · बालक धर्म जतायो ।
दाउद पुरमें जन्म लियो प्रभु · मरियम सुत कहलायो ॥ १
जगकर्त्ता नर काया धरिके · यूसफ टहल बजायो।
ले बालक तन सरल सुभावे · नित सत भक्ति पुरायो ॥ २
द्वादश बरस तरुण मन्दिरमें · ज्ञानिन गर्व निवायों ।
मातु पिताके तब वशिभूता · ग्राम नासरत धायो ॥ ३
जासु बाल सम दीन सुभावा · ताको शिख ठहरायो।
या बलहीनहि बालक जानो · चरण गहन जो आयो ॥ ४

८ गीत ॥

सांझ पड़त मरियम अकुलानी ॥

डगर डगर ढूंढतु है धाये · नाहिन देखे लाल अपानी ।
सुधि नन्दनकी तुम कुछ जानो · सबही से पूछे बिलपानी ॥ १
आतुर ह्वै तब मन्दिर बहुरी · अन्तर चौदिश हेरि समानी ।
बड़े बड़े ज्ञानिनके संगे · बाद करत सुत पाइ अपानी ॥ २
मातु पितापर कौने कारण · शोक बिपति तुम ऐसो आनी ।
प्रभु तब सादर उत्तर दीन्ही · माताके सुनि बैन रुखानी ॥ ३
काज करण पितुके मोहि चहिये · अोलग तुम यह मर्म न जानी ।
चेतहि जो सुनि यह उपदेशा · जान अधम सोई सदज्ञानी ॥ ४

९

मसीह अस टेर सुनाई · सब चितमें लेहु समाई ॥
द्वादश शिष्य प्रभु संग लिवाये : नगरन धूम मचाई ।
बात कहत अरधांगि उठायो : मृतक बहुत जिलाई ॥ १
कोढ़िनको प्रभु चंगा कीन्हा : बधिरण दीन्ह सुनाई ।
पांच सहस्रको पांचहि रोटी : टूकन ढेर उठाई ॥ २
एक समय प्रभु नौका बैठ्यो : चलत बयार सवाई ।
चेले सब घबरावत बोले : प्रभुजी लेहु बचाई ॥ ३
ठाढ़े हो प्रभु हांक पुकारो : सब दुःख दीन्ह भगाई ।
ऐसे काम प्रभु अगिणित कीन्हा : जगमें नाम चलाई ॥ ४

१०

हम यीशु कथा प्रचार करें : खल मानुष जासु दया सुधरें ॥
तन ले प्रभु दीनन नाथ फिरा : निज हाथन रोगिन शोक हरे ।
बिधवा बिन्ती जब कान सुने : तबही मनसा प्रभु तासु भरे ॥ १
प्रभु कोढ़िन अंग अपावनपै : सुख देवनको निज हाथ धरे ।
तम बासिन पै अस कीन्ह मया : सत सूरज हो जगको उतरे ॥ २
दुःख संकट यीशु अपार सहा : जिहि कारण से नर लोग तरें ।
नित रैणदिना प्रभु यीशु दया : हम आश्रित हो बहुधा सुमरें ॥ ३

११ गीत ॥

पातक दंड छुड़ावन यीशू : क्रूश उठायो अति दुःखदाई ॥
पर्ब्बत नाईं अघ मम भारी : अपनी तनपर लीन्ह उठाई ।
बोझ लिये प्रभु अंग पसीना : रुधिर समाना टपकत जाई ॥ १
हाय हाय अस पाप हमारा : जीवन पतिको जगत बुलाई ।
मेरे पातक कारण सोंपे : जो दुःख लीन्ह कहा नहि जाई ॥ २
निशि भर बैरिन अति दुःख दीन्हा : प्रात बिचारासन पहुंचाई ।
बहु विधि झूठे दोष लगाये : तो प्रभु अद्भुत धीर दिखाई ॥ ३
बांधे कर सिर कंटक गूंथे : कांधेपर फिर क्रूश धराई ।
तब प्रभुको डाकुनके साथे : बिकट काठपर घात कराई ॥ ४
यीशु दयामय जग जन त्राता : क्रूश चढ़ाये संकट पाई ।
ठोंके कील हाय पगु सुन्दर : रक्त बहा नर मुक्ति उपाई ॥ ५
कहि है दास धरो मम प्यारो : प्रभुपर आशा सब सुखदाई ।
बाढ़े धर्म्म करें शुभ कामा : शोक दोष मध साहस पाई ॥ ६

१२

जय प्रभु यीशु जय अधिराजा : जय प्रभु जयजयकारी ।
पाप निमित दुःख लाज उठाई : प्राण दियो बलिहारी ॥ १
तीन दिनों तब यीशु गोरमें : तीजा दिवस निहारी ।
प्रात समय रविवार दिनामें : त्याप निवासा छारी ॥ २
भोर सवेरे घोर मरणका : तोड़ा बंधन भारी ।
हार गयो शैतान निबल हो : पायो लाज अपारी ॥ ३
सन्त पवित्र तुरन्त सरगमें : मंगल सुर उच्चारी ।
भास्कर जगप्रकाशक यीशू : आश्रित करु निस्तारी ॥ ४

१३ गीत ॥

पापिनका हितकारी मसीहाजी ॥

बूड़त जगको देखि दयाला : सरग सिंहासन त्यागी ।
पापिन कारण प्राण दयो निज : अस पूरित अनुरागी ॥ १
जय जय करत गोरसे उठ्यो : दोषिन न्योत पसारी ।
सकल लोग चौदिशसे धावो : ख्रीष्ट रुधिर गुणकारी ॥ २
हर्षित हो आवो सब प्यारो : ख्रीष्ट नाम गहि लीजे ।
सब तन मनके क्लेश बिसारे : अमृत रस तब पीजे ॥ ३
ख्रीष्ट नाम बहु बिध सुखदाई : गह्यो जिन सो पायो ।
घातक एक क्रूशपर टेर्‌यो : स्वर्गधाम सो धायो ॥ ४
मोर निवेदन सुनिये प्रभु जी : तिहि तुल मोको कीजे ।
मैं गुणहीन अधीन मसीहजी : तारि मोहि तों लीजे ॥ ५

१४

वाहि भजो मन जो प्यारो जन ।
जो नरन कारण तारण है ॥ १
धर्म्मावतार निस्तार ससांर ।
जो जगत भार उतारे है ॥ २
जो भार तो भयो वाने उठायो ।
औ सिगरो सह्यो वह्यो तो है ॥ ३
अपनोही प्राण तो बलिदान ।
कय गयो त्राण यहीतें है ॥ ४
यातें जो पाप और सारा स्राप ।
जितने सन्ताप सब जाते हैं ॥ ५
जो पछितावे और पास आवे ।
सो निश्चय पावे जो तारण है ॥ ६
प्रभु यीशु नाम सो गुणधाम ।
अरु वाके काम जगत्तारण है ॥ ७

१५ गीत ॥

एक नाम यीशु सांच : सर्ब झूठ औरु रे ॥
जेहि नाम छाड़ि मूढ़ : पड़त भरम भौरु रे ।
अमिय मूरि सुखद कन्द : लखत नाहि बौरु रे ॥ १
आन नाम छलहि ठाम : हाथ लाय छौरु रे ।
उदर नाहि भरत खाय : घाट स्वान कौरु रे ॥ २
जैसही तृषा कुरंग : गहन चहत दौरु रे ।
आय निकट दूरि जात : जात प्राण ठौरु रे ॥ ३
यीशु नाम तरण धाम : नाहि जगत औरु रे ।
जान जेइ सेइ लहत : शीस मुक्ति मौरु रे ॥ ४

१६

यीशु नाम यीशु नाम : यीशु नाम गाउ रे ॥
यीशु नाम गुणन धाम : धर्म ग्रन्थ ठाउ रे ।
रटत नाम पुरत काम : सत्य प्रेम भाउ रे ॥ १
सूर उदित जलज मुदित : अस्तहि मुरझाउ रे ।
सन्त कमल नाम किरण : तैसही उगाउ रे ॥ २
नाम अस्त्र शस्त्र नाम : युद्ध बुद्ध दाउ रे ।
त्रिबिध ताप जेहि दाप : सर्ब दूरि जाउ रे ॥ ३
सबहि हाल सबहि काल : भक्त शक्ति पाउ रे ।
जान अधम सेइ नाम : नरनि मुक्ति ठाउ रे ॥ ४

१७

यीशु नाम मानु मूढ़ : सम्पत्ति धन सांचो ॥
जेहि नाम भज सुलोक : हरहि मूल सकल शोक ।
गहहि दिव्य सुखद ओक : टारि बिभौ कांचो ॥ १
अर्थ नाम जगत तार : प्रेम शक्ति करण पार ।
दुर्गम अति कलुष धार : भक्ति तरणि रांचो ॥ २
और नाम जगत नहि : धर्म ग्रन्थ थपत जाहि ।
हेरि हेरि थकत ताहि : जासु नरनि बांचो ॥ ३

गीत ॥

यीशु नाम गुणन ग्राम : दुःखित दीन सुलभ ठाम ।
तेज सेइ बरद धाम : जान केहि जांचो ॥ ४

१८

करुणा निधान : प्रभु यीशू सुनिये करुणा मेरी ॥
तुम दीननके हितकारी : नर देह आपने धारी ।
तब मसीह नाम पायो : सब शिष्यनके मन भायो ॥ १
हम दोषी दीन बेचारा : सब पापनतें निरवारा ।
तुम दयासिन्धु जगमें : हम डूब रहे हैं अघमें ॥
नर प्राणन के रखवारा : भयमोचन नाम तिहारा ।
हम बुड़े जात यामें : यह गान तुम्हारा गामें ॥ ३
भवसिन्धु अगम अपारा : अब लीजै वेग उधारा ।
अब कृपा दृष्टि कीजै : तन मन अपनो कर लीजै ॥ ४

१९

प्रभु गुण नाहिन लेखन जाए : नाहिन लेखन जाए रे ॥
अकथ कृपा जौं चौदिश तेरा : मही मंडल नित छाए रे ।
लेखि सकौं नहि तौलगि जौलगि : पापहि मति उरझाए रे ॥ १
नर तारण कारण तुम ऐसो : देही दुःख अपनाए रे ।
ले अवतारा तब जगतारा : यीशू नाम धराए रे ॥ २
प्रेम अगम तापर परगास्यो : बूझ न अेा कछु जाए रे ।
बलि कर दीयो प्राण आपनो : तुम सम कौन सहाए रे ॥ ३
पतित उधारण नाम तिहारा : बिनय करो शिर नाए रे ।
कृपा कटाक्षहि प्रभु टुक हेरो : जानहु तब तरि जाए रे ॥ ४

२० गीत ॥

जय प्रभु यीशू जय प्रभु यीशू : जय प्रभु यीशू स्वामी ॥
जय जगत्राता जय सुखदाता : जय जय प्रभु अनुपामी ।
जय भयभंजन जय जनरंजन : जय पूरण सत कामी ॥ १
पाप तिमिर घन नाशक तुमही : धर्म दिवाकर नामी ।
कलिमल दूषण हरता तुमही : संकट बट सहगामी ॥ २
नर तन धारि लियो अवतारा : तजि सुन्दर दिवधामी ।
दय निज प्राण उबारि लियो तुम : पापिन बहु दुरकामी ॥ ३
अस गुण तेरो कस मैं गावों : छन्द प्रबन्ध न ठामी ।
अटपटि टेरन जानक सुनिये : पतित उधारण नामी ॥ ४

२१

जय जनरंजन जय दुःखभंजन : जय जय जन सुखदाई ।
अशरणके शरणागति दायक : प्रभु यीशू जगराई ॥ १
पाप निबारण दुष्ट बिदारण : सन्तन के सहजाई ।
अदभुत महिमा जगत दिखाए : भूमि निवासन आई ॥ २
अलख अगोचर अन्तरयामी : नर तन देह धराई ।
अस गुण तेरो कस मैं गुणिहों : तारणितें अधिकाई ॥ ३
उदधि समाना प्रेम तिहारो : जा मध जगत समाई ।
जान अधम जनको प्रभु दीजे : बिन्दु समाना ठांई ॥ ४

२२

यीशु बिना फिरहीं नर भटके

दिवस मास ऋतु बरस बिलाहीं : नष्ट होत नर अघमें अटके ॥
देखहु मन निज नयन पसारे : नरको अघ कस दुःखमें पटके ।
कोटि यत्नतें त्राण न पावे : स्वर्ग सुपथ से औरों हटके ॥ १
दुर्गत पापिन पाप हरणको : यीशु क्रूशपर सूआ लटके ।
दासहु राखो निज सेवा में : दुष्ट राज सब बन्धन झटके ॥ २

२३ गीत ॥

खेलत खेलत जीव गंमावत : भूले मूरुख नर तन पाये ॥
ज्ञानक दीप बरत उर अन्तर : दिनकर जैसे जोति लखाये।
मोहक जलधर घेरत जबही : सुधि बुधि मगु देत अन्हिराये ॥ १
लोभक कारण लोभी बाझत : बझत कामी काम लपटाये।
परस पास औ बंसी द्वारे : जीवन जस गज मीन गंमाये ॥ २
नयन पसारि नर हेरि देखो : नाचत गावत नर भरमाये।
बिसर गये नर भजन भगवाना : दुष्ट कामना मन भरि लाये ॥ ३
नर खेरि जात जनम अकारथ : दाम जुआरी जस खिनसाये।
जान अधम तुम जनि अस खेलो : खेलि न मरण समय पछिताये ४

२४

कबहु न तेरो गुण हम गाई : निशि दिन माया मध लपटाई ॥
खर कूकर जो जत बुध पाई : चीन्हे स्वामी निज अन्नदाई।
पति निज जीवन देहक दाई : नेकु न चीन्हे शठ नर ताई ॥ १
भोरे करिहिं उठ जग धन्धा : भ्रमित भूले पथ जिमि अन्धा।
प्रेमहि कामिनि जामिनि बन्धा : बिषयन माता बिष अभिसन्धा ॥ २
हंसि हंसि खेलहिं करि अभिमाना : छांहक पाछे जग बौराना।
तजि अमृत दायक सुख नाना : करहि हलाहलके नित पाना ॥ ३
काह करों कछु बस नहि मोरा : रहों ममताहि मद मन भोरा।
जग जाल कटे किमि बिनु तोरा : जान वराका करत निहोरा ॥ ४

२५

दुनियामें दिल नाहि लगाना : यह ज़िंदगीके कौन ठिकाना ॥
ख़्वाबोंमें जस माल ख़ज़ाना : पाय करे मन मौज अपाना।
चांक पड़े सब धूरि मिलाना : तैसहि दुनिया मानु नदाना ॥ १
परनारी धन देखि दिवाना : फ़जिहत खाये प्राण गमाना।
जौंप मिले नहि काम भराना : बुदबुद कूअत बात उड़ाना ॥ २
शीघ्र करो नर बयस सिराना : योशु मसीह पर लाउ इमाना।
जान अधम यहि सांच सिखाना : जौं सुख चाहो अमर निधाना ॥ ३

२६ गीत ॥

छोड़ो जग की माया मनुआ : या जगमें सुख नाहीं मनुआ।
इस जगकी परतीत न कीजै : झूठा है यह जग रे मनुआ ॥ १
यीशु मसीहकी शरण गहो तुम : तब सरगबास तुम पैहो मनुआ।
यह तनमें मन भूल रहे हो : इसमें तो है दुःख रे मनुआ ॥ २
वाहि समै में क्या करिहो तुम : जब बिकसन लगि है काया मनुआ।
इतनी बिनती आसोकी सुनियो : यीशू है बचवैया मनुआ ॥ ३

२७

या जगमें है पाप घनेरे।
काम क्रोध मद माया जगमें : बास करत सबके मनमें रे ॥ १
या जगपर बिश्वास न कीजे : जावेगा यह बीत सबेरे।
रे मन मूढ़ सचेत रहो तुम : जीवन दिन कत हैंगे तेरे ॥ २
प्रभु यीशूपर धरु बिश्वासा : वामें है आनन्द घनेरे।
आजिज़की यहि बिनती प्रभुजी : पाप क्षमा अब कीजे मेरे ॥ ३

२८

जगतमें ना निश्चय पलकी।
सुमरण करिये प्रभुहि सुमरिये : को जाने कलकी ॥ १
हंस रहे जौलग घट भीतर : हरख रहे दिलकी।
हंस निकल जब जावे घटसे : माटी भूतलकी ॥ २
कौड़ी कौड़ी बित्त बटोरे : बात किये छलकी।
भारी गेठ धरे सिर ऊपर : क्योंकर हो हलकी ॥ ३
सांझ पहर दिनकर जस छीजे : जात झलाझलकी।
आयुरबल झट बीतत तैसे : बिजली जसदलकी ॥ ४
काम क्रोध मद माया तजिके : कुटिल बात खलकी।
सेवक यीशु चरणपर निहुरत : सुनिये निरबलकी ॥ ५

२६ गीत ॥

सब दिन नाहि बरोबर बीते : कबहु तपन कभु छांहीं ॥
कभु मन शोगो कभु सुख भोगो : जिमि दिन रात बिलाहीं।
एक दिवस मिलिहै सुख राशो : अगिले दिवस नसाही ॥ १
बादल रंग रंग जस होते : तस जग बदलत जाही।
राजा परजा धनी भिखारी : सबको है गति याही ॥ २
जगमें कभु आंसू कभु हांसो : सागर जस लहराहीं।
या भवसिन्धु बीच बहुतेरे : मुक्ति रतन बिसराही ॥ ३
सोचहु मन या चंचल जगमें : कौन दयाल बचाही।
दीनदयाल कृपानिधि योशू : जोखिम पार लगाही ॥ ४
सत बिश्वासहु लंगर जानो : ख्रीष्ट तीर ठहराही।
दास सदा लौलीन रहो तुम : तौ कछु शंका नाहीं ॥ ५

३०

क्यों मन भूला है यह संसारा : मन मत दे टुक कर ले गुज़ारा।
इस जगमें सुख नित नहि भाई : यह तो है जैसे पानोकी धारा ॥ १
मात पिता और खेश कुटुंब सब : संग नहीं कोई जावनहारा।
अंत समय सब देखन अइ है : छन भरमें सब ह्वैहैं नियारा ॥ २
जो कुछ अंग में होगा तुम्हारा : वह भी सब मिल लैहै उतारा।
नरक अगिनमें जब तुम पड़िहो : तब नहि कोई बचावनहारा ॥ ३
भाई मुकतकी खोज करो तुम : यीशु मसीह प्रभु तारणहारा।
आसी तो प्रभु दास तुम्हारा : तुम बिन नाहीं कोई हमारा ॥ ४

३१

समुझत नाहीं कत समुझाए : मनुआ तू भरमाना रे ॥
केते आए गये हैं केते : रह्यो न नाम निसाना रे।
वृच्छन के छाया तल जैसे : अलसि पथिक बिलमाना रे ॥ १

गीत ॥

सरबस केते इते कमाए : निरखहिं जे हरखाना रे ।
कूंचक डंका बाजन लागे : सपना भोग बिलाना रे ॥ २
प्रेम लगाए नात बढ़ाए : मधु माखी लपटाना रे ।
चोर समाना कालहि आए : लूट्यो मूल खजाना रे ॥ ३
प्रभु योशू अब आस तिहारो : सुधि बुधि सब बिसराना रे ।
कृपा कटाच्छहि प्रभु टुक हेरो : जानक कौन ठिकाना रे ॥ ४

३२

चलना है नित सांझ सवेरे : खोष्ट नामको संग करो रे ॥
दुर्लभ जन्म पाय इस तन में : सोय रहे अघ मदमें भूले ।
धरम बचनतें चेत न आयो : भोर भयो तौ नयन न खूले ॥ १
छोड़ो जगत भवनको आसा : जाहि बसेरा है दिन चारो ।
योशू धरम सुबस्तर पहिरे : सरग निवासन ओर सिधारो ॥ २
खोष्ट बचनके सुनि उपदेशा : मन निज राखो धरि बिश्वासा ।
पाप तिमिर सो फाड़ दियत है : उदय होत मन सत परगासा ॥ ३
मोर निवेदन सुनिये प्रभुजो : हो तुम पितुके पुत्र दुलारे ।
मोहि अधीनक कर गहि लीजे : दीन अधीनक तारणहारे ॥ ४

३३

जिन प्रतीत योशूपर नाहीं : कस पावें भव पारा हो ॥
ज्ञानी पंडित जित जग भयेउ : डूब गये यहि धारा हो ।
ईश्वर बचन अनादि अनन्ता : सोई देत सहारा हो ॥ १
स्वर्ग छोड़ जगमें प्रभु आयो : मेघ जहां अंधियारा हो ।
जननी गर्भ मनुज तन धारा : सकल सृष्टि कर्त्तारा हो ॥ २
नर सब भ्रमें भेड़ समाना : जिनका नहि रखवारा हो ।
तिनको योशु महा सुख दिन्हा : दुःख सहि कीन्ह उधारा हो ॥ ३
दास करे कहं लग प्रशंसा : प्रेम अमित बिस्तारा हो ।
आवो सब मिलि प्यारो भाई : सेंत गहो निस्तारा हो ॥ ४

३४ गीत ॥

चलो रे लोगो : ईश्वर न्योता मानो ।

देश विदेश निवासिन पाहीं : बचन देहि पहुंचानो ॥ १
प्रेम क्षमा सत शांति मिलाई : मुक्ति बियारी ठानो ।
निज पुन बसन मलीन उतारो : तिहि औगुण ठहराणो ॥ २
लेहु योशु नरतारक पुनको : शुभ भूषण अस जानो ।
स्वर्ग भवनको बाट बतावन : योशु भयो अगुआनो ॥ ३
तिन अगुमो भोज सभा में : मिलि बैठो हर्षाणो ।
बावन दूत तहां बसहीं सब : कहि ईश्वर यश बाणो ॥ ४
रोग शोक तृषा कछु नाहीं : प्रभु शोभा निरखाणो ।
खीष्ट दास जो वा सुख भागी : धन्य धन्य सो प्राणी ॥ ५

३५

तू भजि ले मन ज्ञान सहित : योशु जगराई ॥
कोउ जपत बीर राम : कोउ भजत रसिक श्याम ।
कोउ रटत सीय नाम : राधा कत गाई ॥ १
कच्छ मक्ष बराह बाम : नरहरि अरु परशुराम ।
गंग तिरथ बौध धाम : चन्द्र सूर नाई ॥ २
कतिक कोटि सुरण देव : रचित शिलन माटि लेव ।
भ्रमित नरन रहहि सेव : अचरज मुढ़ताई ॥ ३
करहु चेत तुरति स्यान : इन्हन सेव हरहु प्राण ।
कहत बिनत अधम जान : सदसत बिलगाई ॥ ४

३६

मनुआ रे योशूसों कर प्रीत ॥

कृपा करि हैं अधिक : मनुआ रे योशूसों कर प्रीत ।
बाप कर्ममें जग उलझाना : जगको यही है रीत ॥ १
पापी कारण प्राण दिया है : हम को है प्रतीत ।
सुन रे आसी मन चित देके : वही है जग मीत ॥ २

३७ गीत ॥

चेत करो सब पापी लोगो : ईश्वर सुत जग आया है रे ॥
स्वर्ग सिंहासन तेजहि आयो : पावन ग्रंथ सुफल तब कीन्हा ।
पापी जनके भार उठायो : प्राण क्रूशपर बलि कर दीन्हा ॥ १
तेसर दिन आये पुनि उठ्यो : मृत्यु राजपर जयजयकारी ।
राख लियो प्रभु बचन अपाना : धर्म राजका भी अधिकारी ॥ २
नाश नगरसे बाहरि आवो : इतहि तुम्हारा नाहि निवासा ।
धर्म नगर प्रभु यीशु भवन जे : ताहि नगरपर बांधो आशा ॥ ३
अधम जननिको तारणिहारा : वाहीपर तुम दृष्टि करो रे ।
दृष्टि लगाये सुख तुम पावो : सत्य प्रेम जो धीर धरो रे ॥ ४
ख्रीष्ट चरणके अधीन हैं मैं : तिहि जानत हैं आपन स्वामी ।
दीनदयाल कृपाल सुदाता : सेतहि तारत प्रभु अनुगामी ॥ ५

३८

राखो प्रभुकी आशा अनुआ : तारणहार वही है अनुआ ।
सत है निश्चय प्रभुकी बाचा : पर्वतसे अति दृढ़ है मनुआ ॥ १
मरणतें प्रभु प्रेम दिखायो : अगम सिन्धुकी नाईं मनुआ ।
यीशु बिभव गुण घोर जगतमें : किरण रूप झलकत है मनुआ ॥ २
ख्रीष्ट सनातन राज रहत है : प्रलय काल नहि घटही मनुआ ।
आश्रित उसपर आस लगावो : न्याय दिवस नहि शंका मनुआ ॥ ३

३९

का बनियां सम्हु जानो : यह स्वर्गनको राज ॥
जैसे वह मोतीके कारण : जगतो सकल फिरानो ॥ १
काहू पास देख वह मोती : मन में अति ललचानो ।
अपनी सकल सम्पदा देके : वाकुं तब ले आनो ॥ २

गीत ।

अब मैं कहूं बात एक तुमसुं : यह सांचो कर जानो ।
माणिक बड़े मोलके योशू : वाहीकुं पहिचानो ॥ ३
उनकी शरण भली है भैया : पापनतें बचि जानो ।
जो तुम स्वर्गनको सुख चाहो : तो उन्होंकुं मानो ॥ ४

४०

मसीहजीको सुमरो भाई : तुम स्वर्गधाम सुख पाई ॥
सुमरण कीजे चित में लीजे : सत्य शीलता पाई ।
आनंद हैके जय जय कीजे : अन्तर ध्यान लगाई ॥ १
यह जिंदगानी फूल समानी : धूप पड़े कुम्हलाई ।
अवसर चूक फिर पछितैहो : आख़िर धक्का खाई ॥ २
जो चेते सो होत सवेरे : क्या सोचे मन लाई ।
कुल परिवार काम नहि आवे : प्राण छूट छिन जाई ॥ ३
सत्य पदार्थ ख्रीष्ट जग आये : सब पापी अपनाई ।
निहचल बास करो निश बासर : अमर नगरको जाई ॥ ३
अन्तर मैल भरो बहु भारो : सुधि बुधि में बिसराई ।
योशु नाम को बिनती कीजे : अवगुण में गुण पाई ॥ ५

४१

अरे हां रे मन योशु को जपना

योशु सिवा कोई पार न करि है : योशुपर चित धरना ॥ १
माया मोह बीच फल नाहीं : योशू को रटना ।
जबलग प्राण रहत है घटमें : तभी तलक अपना ॥ २
ज्ञान ध्यानसे देखो मनमें : दुनिया है सपना ।
कहता है आसी सुन भाई साधू : आख़िर है मरना ॥ ३

४२ गीत ॥

पियारा कोई : पार तरणको चहे।
यहि संसार महा अघ सागर : तसु जोखिम को कहे ॥ १
सांझ भई घन तम अब छाये : सिंधु लहर हिल रहे।
हे सब प्रिय निकट के बासो : वेगि चढ़ो च्चण लहे ॥ २
तरण तरीपर बैठन धावो : जगत हानि सब सहे।
यहि नौका प्रभु योशु मसोहा : तरे लाख नर गहे ॥ ३

४३

योशु शरणमें धावो भाई : जाते हो अघ नाशा।
नयन खोलि देखो चहुं ओरे : बहु दिन नहि जग बासा ॥ १
पशु पच्ची जित जल थल बासो : सबको मरणक त्रासा।
जग सुख सम्पति नाम बड़ाई : छाड़ो इनकी आशा ॥ २
कोटिन नर अघ तजि पछिताए : तरेउ प्रभु बिश्वासा।
सहि जग निन्दा हे नर भाई : वेगि बनो प्रभु दासा ॥ ३

४४

अबका अवसर काल नहि होगा : ताहि बिचार करो घटहीमें।
चूकि सुभीते मुकत न पैहो : अन्त काल शोकित अपनीमें ॥ १
शुभ सोता सम मुकत बहो है : धाय पियो पापी मनहीमें।
तोही काल जब लेवन ऐहै : जगको तब छाड़ो च्चणहीमें ॥ २
तब नहि कोउ सहायक तेरा : रोवन टेर उठे घरहीमें।
जो टुक जीवन तोहि रहा है : मुकत काज साधो इसहीमें ॥ ३
योशुक रुधिर बहा शुचिकारी : तिहि बिश्वास करो चितहीमें।
दास निबल प्रभु शरण गहा है : देहु निबास सदा सुखहीमें ॥ ४

४५

अरे मन भूल रहा जगमें : अरे मन भूल ॥
यह जग तो मन छोड़ चलोगे : योशू को मत भूल।
यह तनका मन आश न कोजे : होगा धूलमें धूल ॥ १
जबलग जोवन है मन जगमें : तभी तलक मन फूल।
सुन रे आसी मन चित देके : योशू है जग मूल ॥ २

४६ गीत ।

हम हैं पापी अधम : योशू मोहे उधारो।
जन्म से हमने पाप किये हैं : इन पापनसे निस्तारो॥ १
पापमें अपने डूबत हूं मैं : बांह पकड़ मोहे उबारो।
पापकी अगिन तन मन जारे : इस अगिनको निवारो॥ २
यह मन बिगड़ा सोंपत हूं मैं : अपनी दयातें सुधारो।
आसीको अपने शरणमें रखियो : तुम बिन नहीं हमारो॥ ३

४७

हो प्रभु अब करहु क्षेम : हौं गुलाम तेरो॥
बार बार घटी भई : चूक भइ घनेरो।
आए अब निकट तोर : मोर ओर हेरो॥ १
योशु बिदित तोहि नाम : स्वामी तुम मेरो।
कौन पास दास जाय : कोह कौन केरो॥ २
त्रास युक्त जोरि पाणि : अनुतापित टेरो।
एक बेर मोहि ओर : करण अपन फेरो॥ ३
लीजिये उबारि योशु : कठिन काल घेरो।
जान अधम सीस नाय : पड़त चरण तेरो॥ ४

४८

हो प्रभु अब करहु पार : बुड़त नाव मोरे॥
काम लहर उठत तुन्द : क्रोध पवन जोरे।
लोभ भौर घुमत ठौर : मोह सघन घोरे॥ १
तनुक नाव माटि भाव : सहज गलत होरे।
माझ धार झपट धरत : काल मगर दोरे॥ २
योशु नाम जगत ख्यात : लोक जपत जोरे।
ताहि पक्ष निमित्त मोर : द्रवहु नयन खोरे॥ ३
केते तुम तारि लियो : हेरि मोहि ओरे।
झुमरि तोहि अधम जान : प्राण दीन्ह छोरे॥ ४

४९ गीत ।

खाविंद हौं तुम दीनदयाकर : अरजी लीजै मेरी ।
दुःख पीड़ित आए हम धाए : जनि अब कीजै देरी ॥ १
जग धंधा तन निश दिन मारत : माया मध मन घेरी ।
अवसर पाए अब हम आए : सुख शरणागति तेरी ॥ २
हाल हमारो सुनि प्रभु यीशू : टुक निरखो गति हेरी ।
हौं हम दुःखितनमें अति नामी : मम सम दूसर केरी ॥ ३
नाम बड़ो तेरो जगमाहीं : कर्ण सुनें कै बेरी ।
निज नयनन अब देखो आए : मगन भयो लखि मेरी ॥ ४
गुण तेरो हम युग युग गैहों : काटहु पापक ढेरी ।
जान दुःखित हर्षित तब रहिहै : रटिहै धन धन टेरी ॥ ५

५०

सुनिये बिनती हे जगतारा ।
तारि लियो तुम कत जन पापी : लै नर मूर्त्ति शुभ अवतारा ।
पद कर हीनन चोरन गणिका : कूर कुटिल खल बहु परकारा ॥ १
करत अनुताप पापके जेई : कयो तुम तेई भव नद पारा ।
जो जन भाजन घोर नरकके : पाए सो सब पद निस्तारा ॥ २
पापिन कारण तुम दुःख केते : सहि सहि लीयो ताके भारा ।
दिव आसन निज तब तुम तेज्यो : पाप भयो जब भूमि अपारा ॥ ३
अगणित जन तुम सब विध तास्यो : प्रभु अब आए मेरो बारा ।
देरि करो जनि जानक बेरो : दो कर जोरे ठाढ़े द्वारा ॥ ४

५१

तुम बिन मेरो कौन सहायक : प्रभु यीशू स्वर्गबासी ॥
अगणित पापिनको तुम तास्यो : तुमपै जो बिश्वासी ।
दीनहीन शरणागत जेई : तेहि दियो सुखरासी ॥ १
हम पापिनको उधारो प्रभुजी : कृपा दृष्ट निहारी ।
औरनको प्रभु और भरोसा । : हमको शरण तुम्हारी ॥ २

५२ गीत ।

कौन करे मोहि पार तुम बिनु

दीनदयाल दयामय स्वामी : दुःख सुख पालनहार ।
नर अपराधी कैसे तरिहै : दारुण भव नद धार ॥ १
माया जलनिधि केवट कामा : इच्छा धरे पतियार ।
तृष्णा तरंग पवन उठावत : कपट पाल हंकार ॥ २
मोह जलधर गरजन लागे : छाय लियो कडआर ।
कामिनि दामिनि ऐसो चमकत : झहरत नयननि द्वार ॥ ३
आशा लंगर तोहि पर बान्हो : तुमही मम कड़िहार ।
ज्ञान अक्षम भव अर्णव बूड़त : कोउ न आवतकार ॥ ४

५३

मन भजो मसीहको चितसे : वह तुम्हें उद्धारे नरक से ।
जो मन भूलो मनसे वाको : तो कैसे बचोगे नरक से ॥ १
दुःख सुख दोनों वाके बश में : वह तुम्हें बचावे बिपतसे ।
जब तुम पापमें डूब रहे थे : वह आया बचाने स्वर्ग से ॥ २
चार दिननका मरा था लाज़र : वाको जिलाया कबर से ।
भूले मत तू वाको आसो : वह तुझे चुना है जगत से ॥

५४

हे मेरे प्रभु : मो पापी उद्धारियो ।
छोड़ो न कभु : न मोहे बिडारियो ॥ १
हे प्रभु मैं पापी : यह निश्चय आप जानियो ।
हाय कैसा सन्तापी : मो दुःखी पहचानियो ॥ २
हे कृपा निकेतु : मो पापीपे लखियो ।
और तारणके हेतु : मोहे चरणपे रखियो ॥ ३
मैं अति अशुद्ध : अशुद्धकुं शुद्ध करियो ।
मैं अति निर्बुद्धि : निर्बुद्धिकुं बुद्धि भरियो ॥ ४

गीत।

मैं अधम अयोग्य : तो आप यह न मानियो।
पै आप पापी लोग : नित अपनो ओर तानियो॥ ५
जब होयगो मरण : तब प्रभु शांत करियो।
और जबलों हैं जीवन: मोहे प्रेम करके भरियो॥ ६

५५

प्रेम निधान सुकृपा कीजे : दर्शन हे प्रभु हमको दीजे।
हम अति पापी तन ओ मन सों : हे प्रभु पाप क्षमा अब कीजे॥१
सेवक हम हर भांति निकम्मे : बल बुध देकर सेवा लीजे।
यह भवसागर में नित संका : प्रति दिन सेवक रक्षा कीजे॥ २

५६

यीशू पैया लागों : नाम लखाई दिजो हो।
जग अन्धेरे पथ नहि सूझे : दिलको तिमिर नसाई दीजो हो॥ १
जन्म जूनको सोवत मनुआ : ज्ञानक नींद जगाई दीजो हो।
हम पापिनकी अरज मसीहजी : पापक बन्ध छुड़ाई दीजो हो॥ २

५७

करो मेरी सहाय मसीहा जी : तुम बिन कछु न सहाय॥
दर्शन दीजे अपनो कीजे : लीजै मोही बचाय।
या जगको निस्तारण कारण : जन्म लियो तुम आय॥ १
तीन दिनों में उठे कबर तें : देशिन तइं बतराय।
सुन लीजै प्रभु बिनती मेरी : अवगुन पै नहि जाय॥ २

५८

यीशु नाम तुम्हारो प्रभुजी : कृपा दृष्ट निहारो जी॥
तुम परमेश्वर नर तन धार्‍यो : मेरो संकट टारो जी।
झूठे भक्त जो भक्त कहावें : सबको भ्रम मिठावो जी॥ १
पत्थर पूजिके गति नहि पावें : अपनो शरण लगावो जी।
पापिन कारण प्राण गंवायो : यीशु दयाल हमारो जी॥ २

५८ गीत ॥

समुझि बूझि निज राह धरो नर : कौन किधर ले जाता रे ॥
दुइ बट हैं मृतमंडल माहीं : नरक सरग पहुंचाता रे।
एकहि चाकड़ है अरु दूजा : सांकड़ि गूढ़ बताता रे ॥ १
नफ़ा दिखाए इक भरमावे : कलिक रूप मन भाता रे।
यह बटमें बहु मूढ़ मुसाफिर : प्राण अमोल गमाता रे ॥ २
दोसर मारग थोर बटोही : ज्ञानी जो सो गहता रे।
काटे सब कठिनाई आखिर : धाम निजे अपनाता रे ॥ ३
सांकड़ि पैंड़ा है प्रभु यीशू : काहे अस भरमाता रे।
जान अधम चलि देखो यह बट : जों नहि मन पतियाता रे ॥ ४

६०

जिनको रहन प्रेम रस जगमें : सो है खीष्ट पियारा हो ॥
जल बिच मीन रहै नित जैसे : जलमें करत बिहारा हो।
भूमिहि आए देरि न लागत : प्राण भयो झट न्यारा हो ॥ १
जैसे डाली वृक्षहि लागि : पीए रस हरियारा हो।
फले न फूले होय बिजोगा : क्षण में झोंकहि भारा हो ॥ २
जैसे वृक्षहि लपटत लत्ती : जौपै मूल सुखाना हो।
खीष्टहि लपटत भक्तनि तैसे : जाय निकसि जों प्राणा हो ॥ ३
करूणाकर प्रभु नाम तिहारो : करे अधीन बखाना हो।
त्राण दिखावो यश अपनावो : यीशू प्रेम निधाना हो ॥ ४

६१

अहो प्रभुजी : मम ओरहि कान लगाना ॥
बालक हौं प्रभु तोर घराने : मोहे करहु सियाना।
सींचहु यह अति कोमल पौधा : होवे नित फलमाना ॥ १
यह घर अपने योग्य संवारो : जेहि कियो निर्म्माणा।
दुष्ट जगतपर हों जयकारी : खीष्ट विजयके ध्याना ॥ २
प्रेम धीर बुध देहु दयानिधि : दिन दिन काज समाना।
परमधाम पथ आश्रित बाढ़े : सहते श्रम दुखः नाना ॥ ३

६२ गीत ।

प्रभु यीशु मसीह बिन कौन हमारो ।
हम तो हैं प्रभु दास तिहारो ।
पापको अग्नि अति दुःखदाई : इस अग्निको निवारो ॥ १
मेरो मन प्रभु मानत नाहीं : अपनी दयातें सुधारो ।
दीनहीन हम हैं बेचारे : कृपा दृष्टि निहारो ॥ २
मैं अति पापी कर्मको नाहीं : आप निबाहनहारो ।
यीशू है दुःख बूझनहारो : तुझ बिन कौन हमारो ॥ ३
पापिन कारण प्राण दियो है : पापका भार उतारो ।
आसी तुम्हारी शरण गहत है : मेरो पाप बिसारो ॥ ४

६३

प्रभु यीशु दर्शन दीजे जी ।
मोहे शरण अपनो लीजे जी ॥
तुम तो जगके तारणवारे : हम तो पापी दीन बेचारे ।
कृपा अपनीही कीजे जी ॥
तुम तो हो स्वर्गन के राजा : आय जगतमें दीनन काजा ।
मोहे अपनो कर लीजे जी ॥ १
यह शैतान बड़ो दुखदाई : याने जगतहि सकल भुलाइ ।
याको बन्धन कीजे जी ॥
हम तो इन बिषयन में भूले : घरकी चिन्तामें रह फूले ।
धर्म्मात्मा दीजे जी ॥ २

६४

यीशु मसीह मेरो प्राण बचैया ।

जो पापी यीशू कने आवे : यीशू है वाको मुक्ति करैया । १
यीशू मसीहको मैं बलि बलि जैहूं : यीशु है मेरो त्राण करैया ॥ २
गहिरो वह नदिया नाव पुराणी : यीशू है मेरो पार करैया ॥ ३
दीननाथ अनाथके बन्धू : तुमही हो प्रभु पाप हरैया ॥ ४
आसीको अपनी शरणमें रखियो : अंत समै मेरो लीजे खबरिया ५

६५ गीत ।

यीशु दयानिधि सुमरो प्यारो : संकट शोक हरैया ॥
बिपत समय तुम वाहि पुकारो : वहि दुःख भंजन भैया ।
बहु दुःख माहि काम वहि आये : पुन वहि काम अवैया ॥ १
वापर सकल भरोसा राखो : सबको ज्ञान दिवैया ।
सिगरो अघ दुःख हारक योशू : अस को मुक्ति करैया ॥ २
तन मन सांत्वन वातें मिलहो : निज बल कछु न मिलैया ।
आश्रित तोहि कहत है प्रभुजो : तू मम आश पुरैया ॥ ४

६६

जिन योशुक नाम अधार गहे : तिन हानि कहां शयतान कियो ॥
निज प्रेरित पावलको जगमें : सिगरो सत साधक बीर कियो ।
प्रभुसों जत जो सत प्रेम किये : अघ व्याधिहि टारि पवित्र कियो ॥
इलियाजर भक्त सुआश्रितको : दिन चारि सुएपर जीव दियो ।
परतीत करी दिढ़ जो प्रभुको : तिन मृत्युक बन्धन तोड़ दियो ॥
कर जोरि करों प्रभु तोर बिनै : तुम आय बसो अब मोर हियो ।
निज दास अधीनक बांह गहो : तुम पापिन कारण प्राण दियो ॥

६७

Nearer my God to thee

१ तुझ पास खुदावन्दा तुझ पास खुदा
हरचन्द मुझ को सलीब दे पहुंचा ।
तौ भी यह गाऊंगा तुझ पास खुदावन्दा
तुझ पास खुदा ॥

२ दुनिया के जंगल में अन्धेरा है
पर तू रहीम खुदा नूर मेरा है
खुश हो मैं चलूंगा तुझ पास खुदावन्दा
तुझ पास खुदा ॥

३ तू मुझे साफ़ दिखला आस्मानी राह
तब होगी मेरी जान तेरी मद्दाह।
मैं जल्दी जाऊंगा तुझ पास खुदावन्दा
तुझ पास खुदा ॥

४ खुदाया अपने पास मुझे बुला।
दुनिया का बयाबान तब छोड़ूंगा।
शादमान मैं आऊंगा तुझ पास खुदावन्दा
तुझ पास खुदा ॥

६८

भोर भयो तू अबलों सोवत : उठ यीशू गुण गावो रे।
प्रात समय नव गीतहि गाए : चरणन सीस नवावो रे ॥ १
भोरहि भैरो राग अलापो : प्रेम सुतान मिलावो रे।
बीन मजीरा भेरि पखावज : ऊंचहि नाद सुनावो रे ॥ २
हिरदै जंत्र सुतंत्रहि साधो : सतकृत ताल लगावो रे।
तान पुरा सुरनाई नादो : भक्ति सुधारस पावो रे ॥ ३
गायनको गुण जोइ सिखावत : देत मधुर सुर भावों रे।
जान अधम तुम सदगुण ताके : प्रातहि गाय रिझावो रे ॥ ४

६९

जै जै ईश्वर जै प्रभु यीशू : जै सब विध सुखदाई।
रैन सबै प्रभु चैन दियो तुम : दीयो प्रात जगाई ॥ १
सकल दिवसके कारण हे प्रभु : कीजे मोर सहाई।
मन मतंग पै ज्ञान तिहारो : अंकुश राखु लगाई ॥ २
सुतपर पिता दयालू जैसे : करहो जानि भलाई।
सेवकपर नित तैसा कीजे : रखिये पाप बचाई ॥ ३

७० गीत ।

मसीहा बिना कौन हमारा साथी

अल्प दिवस के कारण हम सब : होय रहे जग बासी ॥ १
जात रहत जग स्वपन समाना : भोरे रहत उदासी ।
अचल जगत में बास करण को : हो प्रभु पर बिश्वासी ॥ २
निश्चय पावत हर्ष अपारा : जो नर स्वर्ग निवासी ।
जहां जाय बिस्राम करो तुम : तहां बिबिध सुखरासी ॥ ३

७१

लखोरे नर आपन निर्बल शरीर

प्राण पुरुष जब निकसन लागे : रोके को बलबीर ।
धन सम्पति अरु कुल परिवारा : पड़ा रहा यहि तीर ॥ १
यीशु मसीह की शरण गहो तुम : वही देत मन धीर ।
पापिन कारण रक्त अपाना : दीन्ह जगत को नीर ॥ २
जो यह नीर पियत मन लाई : पावत तन मन धीर ।
ताको यीशु अन्त दिना में : देगो अमर शरीर ॥ ३

७२

Ninety and nine.

१ निन्नानवे भेड़े सलामती से
हो रहीं दरगाह ऽ पनाह ।
पर एक तो पहाड़ों में गल्ले से दूर
भटकती थी होके गुमराह ।
वह जंगल में फिरती बे ख़ौफ़ ओ शऊर
चौपान मिहरबान से वह गई है दूर ॥

गीत।

२ निन्नानवे रहीं तो हैं ऐ चौपान
तू छोड़ दे उस एक को बद--हाल।
चौपान का जवाब है क्यों छोड़ूँ वह एक
वह एक भी है मेरा ही माल।
सच जंगल पुर--ख़ार है कटीले हैं पेड़
पर तो भी मैं जाता हूं ढूंढने को भेड़॥

३ पर किस को है मअलूम वह दुख औ तकलीफ़
उठाता है जिसे चौपान।
कि वह अपनी भेड़ को जो खो गई थी
फिर पावे और करे शादमान।
कि सुना वह जंगल में रो रही है
लाचार होके मरने पर हो रही है॥

४ पर राह भर में लहू के टपके जो हैं
सो कहो हैं किस के निशान?।
उस भेड़ी को पाने जो भाग रही थी
देख ज़खमी भी हुआ चौपान।
कि कांटे चुभ गये लुहान हुये हाथ
जब भेड़ी को ढूंढ लाया मुहब्बत के साथ॥

५ पर सुनो क्या बोलती वह ज़ोरकी आवाज़
हो मेरे साथ खुश और मसरूर
ज़मीन पर से आता वह खुशी का शोर
आस्मान भी है उस से मअमूर।
फ़िरिश्ते पुकारते भी हैं दर आस्मान
जो भेड़ी खो गई फिर लाया चौपान॥

७३ गीत

जो तुम जीवो तो कर लो बिचारा : योशू है मेरो सृजनहारा ॥
जीवन मरण यही संसारा : योशु नामसे होत सुधारा।
मातु पिता दुःख देखनिहारे : कोई नहीं दुःख बांटनहारा॥ १
बेटी बहिन अरु घरकी नारी : रोअत बिलपत सब परिवारा।
लोग बाग सब सोचन लागें : हंस कहां गया बोलनहारा ॥ २
अबही चेतो हे अभीमानी : काल सिरहाने आय पुकारा।
उठरे पापी तोही बुलाई : अगिन जहां नहीं बूझनहारा॥ २
योशुके लोग जहां जत होई : सुनत नहीं यह बोल करारा ।
धर्म्मरूप तब कहत सुनाई : चलिये प्रभु दर्शनको प्यारा ॥ ४

७४

चेत करो सब पापी लोगो : न्याय करन प्रभु आवेगा।
प्रभु ईशू अपने आवन पर : तुरही शब्द बजावैगा ॥ १
चारों दिश में जो मृतक हैं : सब छिन मांहि उठावैगा॥ २
जिन प्रभु योशूको नहीं जानो : दोउ कर बांधि मंगावैगा॥ ३
जो मन बच काया से कीन्हों : सब को लेखो मांगैगा॥ ४
जनमहिं से जो पाप बटोरा : सब का सब दरसावैगा॥ ५
क्या उत्तर प्यारे तू दीहै : और कहां पाप छिपावैगा॥ ६
उत्तर तोहि कछू ना ऐहै : मनही मन पछितावैगा॥ ७
नरक अगिनकी आज्ञा दी है : तब कहु कौन बचावैगा॥ ८
ईशू प्रेम बसे डर जाके : मनही मन हरषावैगा॥ ९
वाको ईशू स्वर्ग धाम में : धनि २ कहि पहुंचावैगा॥ १०
अबही चेतो हे अभिमानी : नहीं बहुत लजावैगा॥ ११

७५

जगत जैसे रैनका सपना : समझ मन कोई नहीं अपना ॥ १
कठिन है मौत की धारा : बहा जामें जगत संसारा ॥ २
पत्ता जैसे डाल का टूटा : घड़ा जैसे नीर का फूटा ॥ ३
ऐसे नर जान जिन्दगानी : अभी नर चेत अभिमानी ॥ ४
भुले मत देखि तन गोरा : कि जग में जीवना थोड़ा ॥ ५
तजो मन बूझि चतुराई : रहो निशंक जग माहीं ॥ ६
कुटुम्ब परिवार सुत दारा : वा दिन होत सब न्यारा ॥ ७
प्राण जब छूटि जावेगा : कोई नहीं काम आवेगा ॥ ८
लगा यीशू नाम से नेहा : सदा तेरा न रहे देहा ॥ ९
कटे जब मौत की फांसी : मिले तब यीशु अबिनासी ॥ १०

७६

लीन अवतार बैतलहम सोई नगरैया

देश यहूदा में कितने गड़रिये : खेतों में जो सब बास करैया १
रात समय सब झुंड रखावैं : अद्भुत भा एक रात समैया ॥ २
ईश्वर का एक दूत जो आयो : ठाढ़ भयो सब के नियरैया ॥ ३
ताही समय प्रभु तेज प्रकाश्यो : चारों दिशा अति भै उजरैया ॥ ४
सब रे गड़रिये देखि डराने : दूत कहा कुछ ना डरु भैया ॥ ५
आनन्द का हम हाल सुनावैं : लोगन को सुख मोद लहैया ॥ ६
ईश्वर है अबिनासी जोई : सोई प्रभु सब त्राण करैया ॥ ७
दाउद की नगरी बिच सोई : जन्म लियो प्रभु यीशु सहैया ॥ ८
वाका पता मैं तुम से बताऊं : जासों लखो तुम जा जग रैया ॥ ९
जो वह बालक वस्त्र लपेटा : चरणी में देखोगे सब भैया ॥ १०
तबही अचानक स्वर्गीय सैना : दूत के साथ प्रगटे हुलसैया ॥ ११
ईश्वर को स्तुति जो करि बोले : जै प्रभु जै प्रभु जोइ कहैया ॥ १२
स्वर्गी प्रभु गुणबाद सु होवें : शान्ति धरा मंह हो सुखदैया ॥ १३
मानुष पै सुख मोद सु छाजे : होवै सदा सुख हे जगरैया ॥ १४

७७ गीत

सुनो ऐ जान मन तुमको यहां से कूच करना है।
रहो तुम याद इ हक्में जबतलक यहां आब दानः है॥ १
अरे ग़ाफ़िल तू क्यों भूला है इस दुनया के लालचमें।
रखो कुछ खौफ़ भी हक्का अगर जन्नतको जाना है॥ २
करो टुक ग़ौर तुम दिलमें कहा क्या क्या तुम्हें उसने।
किया था हुक्म जो हक्ने उसे तुमने न माना है॥ ३
पड़े सोते हो ग़फ़लत में ज़रा टुक आंखको खोलो।
हुई है शाम उठ बैठो मुसाफ़िर घरको जाना है॥ ४
न दौलत काम आवेगी न इस दुनयासे कुछ हासिल।
अगर तुम सोचकर देखो यह सब कुछ छोड़ जाना है॥ ५
जो मलक-उल्-मौत आवेगा तुम्हें इस जा से लेनेको।
बहाना क्या करोगे तुम वह तुमसे भी सयाना है॥ ६
खुदा जब तुझसे पूछेगा तू क्या लाया उस आलम से।
दिया था उम्र और दौलत तो क्या तुहफ़ः कमाया है॥ ७
अगर ग़ाफ़िल रहे हक्से तुम्हें दोज़खमें डालेगा।
रहे हो यादमें हक्की तो जन्नत घर तुम्हारा है॥ ८
हयात अबदी अगर चाहे तो कह योशू मसीहसे तू।
वही शाफ़ी है उम्मतका कि जिसका नाम योशू है॥ ९
सलीब ऊपर उसे रखकर किया है क़तल ज़ालिमने।
उसे मत भूल ऐ आसी वही तेरा ठिकाना है॥ १०

७८

सूरज निकला हुआ सवेरा : अब तक तू क्यों सोता है।
काल खड़ा है सिर पर तेरे : नाहक जीवन खोता है॥ १
ज्ञानी पण्डित ज्ञान विचारे : वेद पढ़े जस तोता है॥ २
कुकर्म्म करके माया जोड़ी : पाप नहीं निज धोता है॥ ३
तसवी पढ़ पढ़ उमर गुज़ारी : कलिमें से क्या होता है॥ ४
दिल में चोर घुसा है भाई : हरदम सोचे रोता है॥ ५

चेला बनके गुरू बना फिर : कड़ुवे बीजा बोता है ॥ ६
चलो पियासो पास योशु के : सोई जल का सोता है ॥ ७
निर्बल को वह बली बनावे : जो कह दे सो होता है ॥ ८

७९ गीत ।

१ खुदावन्द तेरे फ़ज़्ल से
है आज तक हम को ज़िन्दगी ।
हम सभों को यह ताक़त दे
कि करें तेरी बन्दगी ॥

कोरस खुशी से खुशी से
हम देखते रोज़ खुदावन्द के ।
ईसा मसीह की खातिर से
गुनाह हमारे बख़्श तू दे ।
खुशी से खुशी से
हम देखते रोज़ खुदावन्द के ॥

२ हम जायें तेरी पाक दरगाह
और करें पाक इबादत को ।
खुदाया हम पर कर निगाह
और हम पर मुतवज्जिह हो ॥

३ खुदावन्द हम पर ज़ाहिर हो
और सभों की तू कर तअलीम ।
जो ग़ाफिल हों जगा उनको
और अपना दीन फैला रहीम ॥

४ गर हमें होवे मरने को
खुदाया बख़्श दे यह इनआम ।
कि तुझ पास हमें जाना हो
कि करें तेरी हम्द मुदाम ॥

८० गीत।

१ हे परमेश्वर सकल सृष्ट
तूही देखता करके दृष्ट।
सर्बदर्शी तेरा ज्ञान
भूत भविष्यद वर्त्तमान॥

२ दूतसे लेके कीड़ेलों
जितने जीव वा निर्जीव हों।
स्वर्ग धरती नरकमें
एक न छिपता तुझी से॥

३ बैठता फिरता जो रहूं
दुःख वा सुखमें जो मैं हूं।
हाट और बाटमें दिन और रात
तूही सदा है साक्षात॥

४ पाप से भाग हे मेरे प्राण
ईश्वर की सब आज्ञा मान।
मनकी चिन्ता देखता जो
उससे क्यों न डरना हो॥

५ यीशु खीष्टपर कर बिश्वास
सुफल होगी तेरी आश।
वह जो निकट है सदा
बिन्ती निश्चय सुनेगा॥

८१ गीत ॥

There is a fountain filled with blood.

१ इम्मानुएलके लोहू से एक सोता भरा है ।
जब उसमें डूबते पापी लोग रंग पापका छूटता है ॥

२ वह डाकू क्रूशपर उसे देख आनन्दित हुआ तब ।
हम वैसे दोषी उसी में पाप अपना धोवें सब ॥

३ ईश्वरकी मंडली सदाकाल सब पापसे बच न जाय ।
तबतक उस अन्मोल रक्तका गुण न कभी होगा क्षय ॥

४ मैं जबसे तेरे बहते घाव बिश्वाससे देखता हूं ।
मोक्षदाई प्रेमको गा रहा और गाऊंगा मरनेलों ॥

५ और जब यह लड़बड़ाती जीभ क़बर में चुप रहे ।
तब तेरी स्तुति करूंगा और मीठे रागोंसे ॥

८२

Rock of ages cleft for me.

१ ईसा तू है मेरी आस आता हूं मैं तेरे पास ।
आब ओ ख़ून जो बहे थे तेरे छिदे पहलू से ।
वह गुनाह की दवा हो दोज़ख़ से बचाने को ॥

२ मेरी मिहनत है बे काम रोनेसे दिल बे आराम ।
देता है सिर्फ़ तकलीफ़ात देता नहीं है नज़ात ।
मिह्नत मेरी है बे-कार जो न हो तू मददगार ॥

३ ख़ाली हाथ मैं आता हूं कुछ भी नहीं लाता हूं ।
नंगा हूं फ़क़ीर बद-हाल मुझ लाचारको कर निहाल
दे तू मुझे साफ़ पोशाक कर तू मेरे दिलको पाक ॥

गीत ॥

४ अन्धा हूं तू फ़ज़्लसे बन्देको बीनाई दे।
नजिस हूं नजासत को धो ऐ ईसा उसे धो।
नातवान को रह्‌म से तवानाई बख़्श तू दे॥

५ जब तक मेरा रहे दम जिस वक़्त आवे मौतका ग़म।
जब क़ियामत बरपा हो और तू आवे हश्र को।
ईसा मुझे तब बचा अपनी आड़ में तब छिपा॥

८३

I gave my life for thee.

१ जान मैं ने अपनी दी, खून दिया बेश--बहा।
कि पावे ज़िन्दगी, और मौत से हो रिहा।
यह जान यह जान यों दी तुझे, क्या देता तू मुझे॥ ?

२ मैं छोड़कर ख़ास् जलाल, ज़मीन पर आया था।
हुआ ग़रीब तङ्ग-हाल, सद्‌मः उठाया था।
यों मैं ने मैं ने छोड़ा सब, क्या छोड़ता है तू अब॥ ?

३ मुसीबत बे-बयान, मैं ने गवारा की।
कि बचे तेरी जान, और पावे मख़्लसी।
यों दुःख यों दुःखमें मैं रहा, क्या तू ने कुछ सहा॥ ?

४ मैं लाया हूं नजात, और मुआफ़ी का इनआम।
मैं लाया अब हयात, और सुलह का पैग़ाम।
यह सब कुछ सब कुछ आया है, अब तू क्या लाया है॥ ?

८४

दीनदयाल हमारे मसीह जी : तोर चरण पर नेह करों रे॥
देह हमारो तूहि बनाया : धूलक अदभुत रूप अनुपा।
ललित जगत सुभ काज तिहारो : सकल सृष्टि के तुमहीं भूपा १
समुझि सके को यह जग रचना : अचरज है सब तेरो कर्मा।
देखनिहारा खात अचम्भा : बूझि पड़त नहीं एको मर्मा २

गीत ॥

प्रभु यीशु तुम आदर लायक : नाम तिहरो भजवै योगू ।
अगिन समाना तेज सरूपी : तव महिमा जानै तुम लोगू ३
जेहि गुण गावत दिवगण चुके : महिमा जाको अपरम्पारा ।
दीन अधीन कहां लगि बरणै : यीशु मनसा पूर्णिहारा ४

८५

When I survey the wondrous cross.

१ जिस क्रूश पर यीशु मरा था
वह क्रूश अदभुत जब देखता हूं
संसारी लाभ को टूटी सा
औ यस को निन्दा जानता हूं ॥

२ मत फूल जा मेरे मूर्ख मन
इस लोक के सुख औ सम्पत पर ।
हो खीष्ट के मरण से प्रसन्न
और उस पर सारी आशा धर ॥

३ देख उसके सिर हाथ पाओं के घाव
यह कैसा दुःख और कैसा प्यार ।
अनुठा है यह प्रेम स्वभाव
अनूप यह जग का तारणहार ॥

४ देख लोहू चद्दर के समान ।
उसके शरीर को ढांक रहा
हे मन संसार को बैरी जान
और खीष्ट के पीछे क्रूश उठा ॥

गीत ॥

५ जो तीनों लोक दे सकता मैं
इस प्रेम के योग्य यह होता क्यों ।
हे यीशु प्रेमी आप के तईं
मैं देह औ प्राण चढ़ाता हों ॥

८६

The great physician now is here

१ संसार का सब से बड़ा बैद
वह है हमारा योसू ।
उनको जो पाप में पड़े क़ैद
पियार से बोलता योसू ॥

कोरस :— सब संसार में मीठा नाम
पृथवी स्वर्ग में मीठा नाम
सब से प्रिय मीठा नाम
योसू योसू योसू

२ तुम्हारा सब से बड़ा पाप
है क्षमा बोलता योसू ।
तुम स्वर्ग को आओ साथ मेल मिलाप
कि मुकट देता योसू ॥

३ योशू का नाम बचाता है
हर पाप और दुःख से योसू ।
प्यार से अब बुलाता है
कौन और है जैसा योसू ॥

४ आओ भाइयो उसकी स्तुति गाओ
गाओ स्तुति वास्ते योसू ।
आओ बहिनो भी गीत उठाओ ।
नाम धन्यबाद है योसू ।

गीत ॥

५ आओ लड़के तुम भी राग मिलाओ
तुम्हारा भी है यीसू।
खजूर की शाख साथ खुशी लाओ
तुम को बचाता यिसू॥
६ स्वर्ग देश को जब हम चढ़ेंगे
तब देखें अपने यिसू।
वहां फिर नहीं मरेंगे
अनन्त आनन्द साथ यिसू॥

८७

१ मैं तो बड़ा पापी जन प्रभु यीशु दयावान्त।
मेरा ऐसा होगा कौन आपकी कृपा है अनन्त॥
२ आप बिन मेरा होगा क्या कैसा मेरा कर्म भोग।
आप बिन मैं तो होता क्या सब निकम्मा नरकयोग॥
३ मेरी क्या भलाई है जैसा पेड़ है तैसा फल।
पापी मुझमें क्या पुण्य है सूखेमें न मिले जल॥
४ कृपा सागर प्रभु आप सूरज नित प्रकाश तेजमान।
मैं सम्पूर्ण निरा पाप ग्रहण घेरता मेरा ज्ञान॥
५ दीनबन्धु कृपानाथ बिनय मेरी सुन लीज्ये।
यथार्थ करो अयथार्थ पापी जनको शुद्ध कीज्ये॥
६ जबलों जीवन मुझे होय तबलों मुझे रखो दास।
और जब तक मुझे मरण होय तबही लीज्ये अपने पास॥

८८

१ हे दयालु स्वर्गी पिता हिन्दूस्थान पर देखियो।
प्रगट कीज्यो निज प्रभुता मूरत पूजा मेटियो।
सच्चा धरम शीघ्रसे फैलाइयो॥

गीत ॥

२ प्रभु यीशु सुत पियारे दया कर इन लोगोंपर।
गुण और धर्म्म जो तिहारे सबके मनमें स्थापन कर।
त्यागें देवता हिन्दुस्थानके नारी नर ॥
३ हे धर्म्मात्मा शांतिदाता बिना तेरी जोत और ज्ञान।
अंधियारा मिट न जाता छा रहा है सकल स्थान।
प्रगट कीज्यो अपनी जोत हे दयावान॥
४ पिता पुत्र और धर्म्मात्मा बिनती मेरी सुन लीज्यो।
तेरा नाम और तेरी महिमा जगके अन्तलों प्रगट हो।
हे मोक्षदाता सब संसार में राज कीज्यो॥

८९

Abide with me.

१ रह मेरे साथ जल्द हुआ चाहती शाम
खुदावन्दा रह मेरे साथ मुदाम।
दिल हो बे-चैन न कोई रहें साथ
बेकस के हामी रह तू मेरे साथ॥
२ यह ज़िन्दगी जल्द गुज़र जाती है।
और उसकी खूबी जल्द मुरझाती है।
सब कुछ है बातिल उस से खैंचूं हाथ
तू बे-तब्दील है रह तू मेरे साथ ॥
३ तू है ज़रूर मुझे हर वक़्त हर हाल
शैतान के जाल से तू ही है रखवाल।
मुझे संभालता सदा तेरा हाथ
दुख हो ख़ाह सुख हो रह तू मेरे साथ॥
४ पस तेरी क़ुदरत बख़्शती इतमीनान
दुख औ तकलीफ़ में रहूं ब-अमान।

गीत ॥

हां मौत को भी नेस्त करता तेरा हाथ
ग़ालिब हो रहूं गर तू मेरे साथ ॥

५ अपनी सलीब को मरते दम दिखला
तल्ख़ो कर दूर आसमान के दर बतला।
आसमान का नूर मिटाता सब ज़ुल्मात
ज़ीस्त भर और मौत में रह तू मेरे साथ ॥

९०

जगतारक यीशु समीप चलो : तिन सेवक पावन भाग भलो ॥
धन आदर नाम बिलास गहे : मत आपहि नयनन मूंदि छलो।
जग बीतत है जस मेघ धुआं : तिहि भोग किये कित काल पलो ॥ १
जनि मुक्ति बिखै निहचिंत रहो : नहि तो पछितावत हाथ मलो।
प्रभु यीशु पहाड़ समान अछै : तिहि तारक मानि कभू न टलो ॥ २
शुभ भूतलमों जस बीज बढ़े : तस यीशुहि मानि सुकाज फलो।
प्रभु आश्रित होय बिचार दिवा : स्वर्गी घर जावनको उछलो ॥ ३

९१

यीशु चरण जाके चित भावे : परमपदारथ सो अपनावे ॥
धनके धन्धा जनके चिन्ता : तनके स्वारथ अधिक न भावे।
काम न क्रोध न लोभ न मोह न : दंभ न ताको नाच नचावे ॥ १
दुर्जन जनके संगत छाड़े : सज्जन जनसे नेह बढ़ावे।
बिधि परमेश्वर प्रतिपालन करि : निशि दिन तामध ध्यान लगावे २
परि बोहाये मन निठुराई : शील दया नित हिय उपजावे।
आनक दुःख दूर करिबेको : अपनो तन मनपै दुःख खावे ॥ ३
काल कराल अभय जगबासी : मरण समय लखि अति हरषावे।
जान अधम बिना प्रयासहो : तरि सो नर भवसागर जावे ॥ ४

गीत ॥

८२

कोउ पथिक नहिं बहुरत भाई : जाय अगोचर देशा ।
चार दिना रहि के जग मांहीं : करें मुक्ति अन्देशा ॥ १
जीवन काल लाभ करि जानें : को जाने कब शेषा ।
न्याय के सनमुख काम न आवे : कपट सहित शुभ भेषा ॥ २
निपट भयानक पाप हमारे : माने अब उपदेशा ।
यीशू दास बने तो पावे : स्वर्ग भुवन प्रवेशा ॥ ३

८३

गुनाहों को अपने जो हम देखते हैं ।
तो ग़ज़बे इलाही बहम देखते हैं ॥ १
अगर ग़ौर करते हैं फ़िआलों को अपने ।
तो लायक जहन्नुम है हम देखते हैं ॥ २
अरे दिल तू ग़फ़लत में कब लग रहेगा ।
तेरे वास्ते दर्द औ ग़म देखते हैं ॥ ३
गुनाहों में ऐ दिल रहा तू जो मायल ।
सज़ा उसकी पाओगे हम देखते हैं ॥ ४
तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिस के ख़ातिर ।
मरा है मसीह खुद यह हम देखते हैं ॥ ५
जो पकड़ें वसील: शिताबी मसीह का ।
हयात ई बक़ा उन में हम देखते हैं ॥ ६

८४

शांति सहित धर्म्मी मर जाहीं : जेहि प्रभु यीशू पर बिश्वासा ॥
निर्बल शरीर छीण मुख पीला : मन हर्षित प्रभु दर्शन आसा ।
सुखसम्पति तजि शोगनकरहीं : सकलसोचते मिलहि निकासा ॥ १
घर का करों वह लोभ करे हैं : जाको स्वर्ग भवन का वासा ।
नयन मूंदि इत हित मित छूटे : उतहि बिलोके परम हुलासा ॥ २

गीत ॥

निपट बिकट एक घाटउतरके : और न पैहै कछु दुःख त्रासा ।
थकित पथिक बिश्राम करै है : देखि पिता शुभ रूप बिकासा ॥ ३
अमर लोक का पथयह दारुण : जामें होत शरीर बिनासा ।
प्रभु जब आश्रित वा पथ जावे : देहु दया करि मनहुं दिलासा ४

९५

शांति रहित सो जन जग छोड़े : यीशू ते जो रहत नियारा ॥
हांसी नाच गान धुनि तजि के : चलत जहां नित हाहाकारा ।
कैसो जग में धन सुख भोगे : वादिन टुक नहिं करै उपकारा १
तबहित भ्राता का।कर सकहों : का।। फल सकल जगत अधिकारा।
जेहि प्रणामा लाखन कीन्हा : कांपत सोचत दिवस बिचारा २
प्रथम शरीर कष्ट अति दारुण : दूजा बिकट बिकल मन भारा ।
तीजा शांति देत नहि कोई : निज पुण्यतेंनहि मिलत सहारा ३
मृत्यु घोर शंका तम माहीं : यीशु दया चमकत जस तारा ।
आश्रित हो अब तासु पयारो : मरण काल पैहो निस्तारा ॥ ४

९६

मसीह पुकारता है ऐ गुनहगारो ।
मुहब्बत की आवाज़ सुनो ऐ प्यारो ॥ १
गुनाह के बोझ से जो दबे हो तुम ।
चले आओ उसके पास ऐ ज़ेरबारो ॥ २
मसीह हलीम है और गुनाह बख़्शिन्दः ।
शिताबी बोझ को उसके उठाओ ऐ प्यारो ॥ ३
तुम दिल में आराम उसी से पाओगे ।
और दोज़ख़ से बचोगे ऐ प्यारो ॥ ४
बार बार यह आजिज़ यही पुकारै है ।
मसीह के पास चले आओ सब ख़ताकारो ॥ ५

९७ गीत ॥

१ हे यीशु मैं गलगथा पर : सलीब पास खड़ा हूं ।
यहुदिया में यही स्थान : पियारा मैं कहूं ॥

२ हाय छेदे पांजर पांव और हाथ : हाय संकठ रूपीमुंह ।
मसीह से त्राण यूं हुआ है : मैं ध्यान से ताक रहूँ ॥

३ यह दुःख क्या मेरे लिये था : हे प्रभु दे सहाय ।
कि खोलके मेरा दुर्बल मुँह : इस प्रेम की स्तुति गाय ॥

९८

हमारे दिल की हालत को : खुदा जाने या हम जानें ।
मसीह से है हमें उलफ़त : खुदा जाने या हम जानें ॥ १
मुहब्बत की बिछी चौसर : लगी है जान की बाज़ी ।
फ़िदा है जान ईसा पर : खुदा जाने या हम जानें ॥ २
कलाम इ पाक की बरछी : लगी दिल पर मेरे तिरछी ।
कलेजा हो गया चलनी : खुदा जाने या हम जानें ॥ ३
मुहब्बत के समुन्दर में : डली ईमान की किश्ती ।
चली जाती है बेखतरे : खुदा जाने या हम जानें ॥ ४
न दुश्मन की मुझे दहशत : नहीं तुफ़ान का खटका ।
मसीह है ना खुदा अपना : खुदा जाने या हम जाने ॥ ५
यही है आरज़ू अपनी : रहें हम साथ ईसा के ।
नहीं चाहते जुदा होना : खुदा जाने या हम जानें ॥ ६
चलो साबिर इबादत को : झुकाओ सिर मसीहा को ।
न होवे ज़ाहिरी उलफ़त : खुदा जाने या हम जानें ॥ ७

९९ गीत ।

ज़रा टुक सोच ऐ ग़ाफ़िल कि क्या दमका ठिकाना है ।
निकल जब यह गया तनसे ता सब अपना बिगाना है ॥ १
मुसाफ़िर तू है और दुनिया सरा है भूल मत ग़ाफ़िल ।
सफ़र मुल्क इ अदम आख़िर तुझे दरपेश आना है ॥ २
लगाता है अबस दौलत पै क्यों तू दिलको अब नाहक ।
न जावे संग कुछ हरगिज़ यहीं सब छोड़ जाना है ॥ ३
न भाई बन्धु है कोई न कोई आशना अपना ।
बख़ूबी ग़ौर कर देखा तो मतलबका ज़माना है ॥ ४
लगे रहो याद में हक़की अगर अपनी शफ़ा चाहो ।
अबस दुनियाके धन्धों में हुआ गुल क्यों दिवाना है ॥ ५

१००

मन काहेको होहु निराशा : प्रभु यीशु से राखो आशा ॥
जिन मर्त्तभुवन में आये : तिन मुक्ति पदार्थ लाये ।
तुम वातें करो प्रत्याशा : तब पैहो स्वर्ग निवासा ॥ १
यीशू मृत्युभुवन जयकारी : तिन स्वर्गलोक अधिकारी ।
आसो वातें करो तुम आशा : तब पैहो मनमें दिलासा ॥ २

१०१

दुनिया है दग़ादार : ख़बरदार यारो ॥
जो सब नज़र आती है : रुम ख़्याल शुमारो ।
रफ़तारकी बेर हुई : जिमि हाट उसारो ॥ १
रंग भूमि नर आए : कछु खेल पसारो ।
एकहि छन नाच लिये : फिर जाहि किनारो ॥ २
मुसाफ़िर के नाईं : निज राह सिधारो ।
पलमें धन लूट लैहैं : जग चोर चवारो ॥ ३
किसी को न दिल दीजे : दिल्ल जान बिचारो ।
एकहि दिलदार है : प्रभु यीशु तुम्हारो ॥ ४

१०२ गीत ॥

खीष्ट महाप्रभु निज प्रभुताको : कत कत भांति दिखाई हो ॥
जग डूबत निज दास बचावन : नौका झट बनवाई हो।
नूह सुजनको तब निस्तार्‍यो : दुष्टन तें अलगाई हो॥ १
नबुखदनिसर भयो अति कोपी : सन्तन अगिन फिंकाई हो।
अगिन मध्य तिन संग फिरे प्रभु : बालहु नहि मुर्झाई हो॥ २
दनियलपर खल जन रिसियाने : सिंहन मांद पहुंचाई हो।
सिंह मुखको प्रभु रोकयो तबही : सेवक लीन्ह छुड़ाई हो॥ ३
मोहि अधीनक खीष्ट भरोसा : जेहि प्रभुता अधिकाई हो।
मेरे बार देर जनि कीजै : दीजै दोष दुराई हो॥ ४

१०३

करों नहि गैहों गुण शतबारा : अस मित है नहि या संसारा॥
तीन लोक पति नर तन लेके : सह्यो दुःख औ शोक अपारा।
प्राण दान जग हेतु कियो है : जगत कहीं नहि ऐसो प्यारा॥ १
यीशु समीप चलो नर पापी : वह निश्चय जग तारणहारा।
बैरिण हित बैरिण में आयो : छल करि बैरिण वाहि संहारा॥ २
मित्र निमित नर मरत न कोई : शत्रुण को प्रभु कीन्ह उधारा।
आश्रित लाखों धन्य कहतु है : धन्य सदा प्रभु नाम तिहारा॥ ३

१०४

जय प्रभु यीशु जय अधिराजा : जय प्रभु जयजयकारी।
पाप निमित दुःख लाज उठाई : प्राण दियो बलिहारी॥ १
तीन दिनों तब यीशु गोरमे : तीजा दिवस निहारी।
प्रात. समय रविवार दिनामें : स्नाप निवासा छारी॥ २
भोर सवेरे घोर मरणका : तोड़ा बंधन भारी।
हार गयो शैतान निबल हो : पायो लाज अपारी॥ ३

गीत ॥

सन्त पवित्र तुरन्त सरगमें : मंगल सुर उच्चारी।
भास्कर जगप्रकाशक यीशु : आश्रित करु निस्तारी॥ ४

१०५

रे मन मूढ़ नदान किसाना : अस खेती क्यों करता है॥
चास समार समै सिर कोड़नि : अनुदिन चौकी देता है।
चारि दिना पुन अंतर पाए : बनका बन ह्वै जाता है॥ १
करि गुणावन तिथि पक्ष मासा : आसा धरि बिज बोता है।
दह्यो जरी तब नाशक आए : मूस चोर अनुहरता है॥ २
जसहु तसहु भागहि कछु बाचे : लवन करण जब जाता है।
हाकिम कठिन कठोर सुन पाए : दो कर बांध मंगोता है॥ ३
आस चास औ मरजाद गई : माल जाल बिक जाता है।
देखि दशा धनिको ना दरदे : गरहत्या उठि देता है॥ ४
अबहु न चेत्यो तुम जान अधम : झूठे माथ ठठोता है।
यीशु स्वामी महिके मालिक : छेति न तिहि क्यों करता है॥ ५

१०६

देखि देखि मैं अति दुख खावों : नाशमान है संसारा हो॥
जगके अन्त दूर मति जानो : करो बचन यह पतिआरा हो।
धर्म्म ग्रंथ तुम खोलहि देखो : सत्य करत हम परचारा हो १
तुरति निकलि यह जगसे भादो : बरत अग्नि जहं आगारा हो
देरि न लावो प्राण पियारे : जौं तुम चाहो सुख सारा हो २
क्रूशपर ख्रीष्ट को तुम देखो : तुच्छ है जगके व्योपारा हो
उन बिनु नाहिन शरण दिवैया : मिले न दोसर संसारा हो ३
यीशु प्रेम है परम पदारथ : जस अदभुद सूरत धारा हो।
नाश नगर से खेंच बचावत : निज जनको तिहि जो प्यारा हो ४
मैं जो दास अधीन निकम्म : आश्रित हों मैं तोहारा हो।
जगके स्वामी हो तुम हो प्रभु : जावों मै किनके द्वारा हो ५

गीत १०७

प्रभु यीशु को प्रेम करो तुम : सब मिलि आवो गावो।
सब पापनको त्यागन करिके : शरण खीष्टकी आवो॥ १
नरक अगिनतें भाजो अबही : अपनो प्राण बचावो।
यीशु खीष्ट तारक है जगमें : तन मनतें तुम ध्यावो॥ २
हम भाइनकी एही बिनती : पाप मोक्ष करवावो।
हम तुम मिलके आनंद होंगे : अनन्त जीवन पावो॥ ३
सांचोपै प्रतीत करो हो : झूठा धर्म्म मिटावो।
नरक छोड़के स्वर्ग सिधारो : खीष्ट दास हो जावो॥ ४

१०८

क्या कहुंगा मैं सन्मुख तेरे : लज्जित हैां निज कर्म निहारे॥
पाप हमारा अतिशय हुआ : नभलौं ऊंचो मान पसारा।
शक्तिहीन तन मन अकुलाना : सीस चढ़ाए ऐसो भारा॥ १
तनिको साहस नाहिन मोको : थर थर कम्पित गात हमारा।
काह कहों कछु वाक्य न निकसत : न्याय दिवसको करे सहारा॥ २
यीशु खीष्ट जगपति जगतारक : शांति शब्द सो कीन्ह उचारा।
दृढ़ बिश्वास धरे जो मोपर : गिरि सम पाप मिटावों सारा॥ ३
दास अधीन तिहारो हैां प्रभु : मुख बाणीपर आश हमारा।
न्याय करण जब जगमह आवो : मम ओरे करि हो सुनिहारा॥ ४

१०९

अवगुण मोर न लेखन जाए : नाहिन लेखन जाए रे॥
जन्मतहीतें तव अपराधी : रोम रोम अघ छाए रे।

गीत ॥

छण छण जैसे बयसहि बाढ़त : तैसि पाप सुभाए रे ॥ १
मन बच काया से निशि बासर : अशुभ करण हम धाए रे।
तारणिहारक नाम न कबहु : शुध मनतें हम गाए रे ॥ २
कोटि कोटि अघमय हिय मेरो : तारणितें अधिकाए रे।
यीशु दिनकर भौ प्रगासा : दीन्हो सकल नसाए रे ॥ ३
युग युग तेरो गुण हम गैहों : हो तुम परम सहाए रे।
जान अधम यहि अवसर पाए : शरण तिहारो आए रे ॥ ४

११०

प्रभु हे मेरी ओर निहारो।
प्रजा पुत्र हम हों प्रभु तेरो : जोपें आज्ञा टारो ॥ १
हों हम जन्महितें अपराधी : मन बच काया सारो।
कोनो कर्म न मोसे छूटा : सब बिध बात बिगारो ॥ १
हों अपराधिन में हम नामी : तुम नामी जगतारो।
नाम बड़ाई जगत में मोहि : तारिबे में तिहारो ॥ ४
सीस चढ़ाए पापक भारा : आए तोर दुआरो।
को यह जानक भार उतारे : यीशू ख्रीष्ट बिनारो ॥ ४

१११

यीशू चरणन को चेलो : मैं हूं यीशू चरणनको चेलो।
रैन दिना लूं शरण तुम्हारी : पापी दीन बेचारो ॥ १
आवो गावो सब मिलि धावो : ख्रीष्ट जगतको प्यारो।
यीशू शरण में आये सेती : छूटे सब जंजारो ॥ २
पापिन कारण प्राण गमायो : सह्यो आपही भारो।
ऐसो सांचो प्रभु हम पायो : जग को तारन वारो ॥ ३

गीत ११२

* प्रभु है तेरी बड़ी बड़ाई *

जग मे जेते जीव चराचर : साच्ची देहिं पुराई ॥ १
अपराध करी बहु तेरी मैं : दंडहि सीस चढ़ाई ।
चेमनि हारो है कोउ दूजा : जांको बिन वीं जाई ॥ २
आए अब दरबार तिहारो : देते तोर दोहाई ।
न्याय करो जिन मेरो स्वामी : राखो लाज क्षपाई ॥ ३
को करि सकि हैं तोर बराबर : को अस करूणा पाई ।
अपराधक दंडहि आप सहे : दंडो देहि छोड़ाई ॥ ४
स्वर्ग सिंहासन छाड़हि आए : प्रेम दया दरसाई ।
जान अधम नर तारण कारण : योशू देह धराई ॥ ५

११३

सत गुरुकी हम बात सुनें सब : मन चित मंगल पैहैं ॥
गर्व्व रहित नर धन्य कहावें : स्वर्ग निवास करैहैं ।
धन्य शोग अघ कारण करिहैं : दुःख से सकल तरैहैं ॥ १
कोमल धन्य कोपके त्यागी : जगत राज अपनैहैं ।
धन्य धर्मके चुधित पियासे : मनसा तिनहि फलैहैं ॥ २
धन्य दयाल दीन हितकारी : तिनहि दया अधिकैहैं ।
बिमल धन्य अघ तन मन तजहीं : ईश्वर दर्शन पैहैं ॥ ३
धन्य मिलापी क्रोध बिनाशक : ईश्वर सुत कहलैहैं ।
सतके कारण दुःखित धन्य हैं : स्वर्ग राज हरषैहैं ॥ ४

११४

प्रेम सहित मन हमार : योशू गुण गाउ रे ॥
प्रेमके प्रताप पाप : दूरही दुराउ रे ।
प्रेम सहित गुणन गाय : अमर फलनि पाउ रे ॥ १

गीत

प्रेम सों प्रबल नाहीं : कछुक दृष्टि आउरे ।
बिषय बन्ध काटि तुरति : मुक्ति हि अपनाउ रे ॥ २
प्रेम वोहित चढ़ि मना : भवहु पार जाउरे ।
प्रेम अस्त्र बांधि शस्त्र : महानहु हराउ रे ॥ ३
प्रेम फलनि धर्म्म ग्रन्थ : बार बार गाउ रे ।
प्रेम सदम सुखद सकल : जान सर्ब ठांउ रे ॥ ४

११५

ईश्वर कृपा युत कर्तारा : ताही भजो करि प्रेम हुलासा ॥
ताको कबहु न आदि न शेषा : तासु अमित गुण जग प्रकासा ।
अखिल जगतसृजन तिनकीन्हा : अगम जोत में करहीं निवासा ॥ १
जीवन मरन शुभा शुभ सारे : बिपतसुगत दुःख सुख अरु बासा ।
से सब जगकर्ता जग माहीं : देत जहां जेहि निजअभिलाषा ॥ २
नर आयुर्बल छांह समाना : बिनसत है ज्यों नीर बतासा ।
ईश्वर अमर अच्चयतसु महिमा : कबहु न ताके राज बिनासा ॥ ३
अन्त दिवस में जग जल जैहे : मिटि जैहैं रबि चांद बिकासा ।
ईश्वरआस्रित हो रे मनुआं : अटल रहै तब तोरी आसा ॥ ४

११६

टारो मन की भ्रम भारी प्रभु : टारो मन को भ्रम भारी ॥
काहे कोऊ पण्डित ज्ञानी : काहे कोऊ जड़ भारी ।
कोऊ काहे राज बिलासे : काहे कोऊ दुःखियारी ॥ १
को अभ्यन्तर बैठ नचावे : को अद्भुत सूत्र धारी ।
शुभा शुभ कौन करावत कोह : नरक स्वर्ग के अधिकारी ॥ २
हों मैं कौने आय कहां से : किमि कारन नरतन धारी ।
जैहों कौने ठाम निदाना : होइहै गति कौन हमारी ॥ ३

कैसे जग में पाप समाया : काहे यिशु औतारी ।
जान अधम ये मर्म हिं बूझन : बिनवों प्रभु बारम्बारी ॥

११७

१ सच्चा ईश्वर कौन है भ्राता : मुझसे कह दो यह बिचार ।
वह है सब का जीवन दाता : सारी सृष्ट का सृजन हार ॥

२ सच्चा ईश्वर एक ही जानो : निर्विकार है औ कृपाल ।
उसे छोड़ के और मत मानो : केवल वह है दीन दयाल ॥

३ क्या परमेश्वर ने कुछ किया : जिस्से हमको मिले त्राण ।
हां निज सुत एकलौता दिया : जो चढ़ावे अपना प्राण ॥

४ मुझे फिर बतावो पियारे : यीशु ने क्यों दिया प्राण ।
जगत को जो पाप से तारे : इसके लिये था बलिदान ॥

५ उसने अपना प्राण जो दिया : तो क्या मौत के बस में है ।
नहीं प्यारे वह फिर जिया : वह है प्रभु मृत्युँजय ॥

६ जो बिश्वास उसी पर लावे : पाप के दंड से बचेगा ।
झूठे देव की ओर जो धावे : नरक कुँड में गिरेगा ॥

११८ गीत

यही जग बन अति भारी : शंका संकट बासा॥
मानुष मिस्ना सिंह शैताना : झाड़ी झूठ बिलाशा।
घाट अगोरि काल गौं गहिके : करहो प्राण बिनासा॥ १
भूली भटकी भेड़ उबारण : प्रभु तजि तेज निवासा।
बन घन बिच बहु भ्रमत योशू : लेहि मेष निज पासा॥ २
देह बिदारण दुःख अति दारुण : पीड़ स्राप उपहासा।
भार भयानक भया बिमलको : पापिनको प्रतिआशा॥ ३
नर निस्तार निरखि नयनन तें : पावहिं दूत हुलासा।
स्वामी धुनि सुनि आ आत आवा : प्रभु करु मोर निकासा॥ ४

११९

भजि ले मन दीनबन्धु : दीनके सुतात रे।
दीन शरण दीन भरण : दीन जनन भ्रात रे॥ १
दीन पोष दीन तोष : तासु सतत पात रे।
दीन निकट जेहि जात : फोरि नाहि आत रे॥ २
दीन अशन दीन बसन : सर्बके सुदात रे।
दीन नेह दीन गेह : दीन नात जात रे॥ ३
दीन ज्ञान दीन मान : दीन शान पांत रे।
दीन सतत सुफल सकल : तासु पाय खात रे॥ ४
दीन नाथ दृष्टि ओर : कोउ नाहि आत रे।
दीन जान जोड़ि पाणि : यीशु गुणन गात रे॥ ५

१२०

बिफल करों जनम गंवावो : चेतन नर तन पाए॥
भटके मन्द महासागर में : परम सुपंथ भुलाए।
जल पाखानहु इष्ट बनाई : निज प्रभुको बिसराए॥ १
जगमें घिनित कुकर्मन माहीं : अल्प दिवस सुख पाए।

गीत

सोच बिचार करो नर अबही : जग के दिन अपनाए ॥ २
एक दिवस बेगी अब ऐहै : जग सुख सकल नसाए।
छूटें सम्पत गृह सुत दारा : जिमि निशि सपन लखाए ॥ ३
हे मन मूढ़ अबहु तनि सोचो : ईश्वर प्रेम बुलाए।
जगपति निज सुत यीशु खीष्टको : तुम हित दीन्ह पठाए ॥ ४
जे जन आस उसीपर राखे : न्याय दिना बच जाए।
कहत दास प्रभुको कर जोरि : बेगि फिरो पछिताए ॥ ५

१२१

हम पापिन को उधार : प्रभु यीशु बिन को करिहै ॥
स्वर्ग छोड़ नर जन्म लीन्हा : पापी उधारण पार।
मातु पिता सुत बंधू बनिता : जात कुल धन परिवार ॥ १
ज्ञान ध्यान पुन धर्म तुम्हारे :इनतें नहीं निस्तार।
इन्हीं त्याग योशू शरण गहो तुम : जो चाहो जीवन अपार ॥ २

१२२

तुम हमपर कृपा कीन्ही हो : यीशु इब्न अल्लाह।
बाप और बेटा और रूह पाक : तुम तीनों हो बचवैया ॥ १
बिपत पड़े कोई काम न आवे : मात पिता अरु भैया।
जो पापी यीशु कने आवे : यीशु है बचवैया ॥ २
रूह कुदस दुनयामें आया : दीनके काम सिखैया।
पाप हमारे खोवनहारे : दिलके साफ़ करैया ॥ ३

१२३

जय परमेश्वर प्रेरित आवत : सोहत प्रभु सुखदाई ॥
जय जय दाउद बंश उजागर : शांति जगत जिन लाई।
जगत भुआला जय शुभशाला : प्रगटे निज पुर आई ॥ १

गीत ।

को तुमरे सम अधम उधारण : किन के अस प्रभुताई ।
जय जनरंजन जय दुःखभंजन : जय खलगंजन सांई ॥ २
लोक सुहावन शोक नशावन : युग युग तोर दुहाई ।
त्राहि त्राहि नर नारी टेरें : जान अधम हर्षाई ॥ ३

१२४

ईश्वर सनमुख पाप किया रे : क्यों नहि सोचत बारम्बारा ॥
पूजा पाठ दान पुन सारे : तुमको नहि कछु करत गुहारा ।
इनतें अधिक बोझ मन माहीं : पड़ही ईश्वर कोप अपारा ॥ १
ऐसो ईश्वर कोप भयानक : सो किमि सहहीं प्राण तिहारा ।
कर बिश्वास बेग मन माहीं : देखहु ईश्वर पुत्र दुलारा ॥ २
सोउ महा प्रभु ईश्वर सुत जो : निज हिरदै सह्यो अघ भारा ।
तन मन करम फिरो जगहेतो : ख्रीष्ट मेध जानत उपकारा ॥ ३
जोउ गहे यह शरण सबेरे : ताहि नरकतें मिलत उधारा ।
सो नर पातक मोचन पाई : ईश्वर महिमा करत प्रचारा ॥ ४
कहहीं दास सुनो चित लाई : आस धरो हे मित्र पियारा ।
और उपाय मुक्तिका नाहीं : मिटे न इस बिन पाप बिकारा ॥ ५

१२५

क्षेम करो अपराध हमारे : हौं हम पापी हे जगतार ॥
धन पाये कछु दान न कीन्हा : कीन्ह न दुखितनके उपकार ।
निरखि अनाथनको मुख फेर्यो : ऐसहि नित मेरो व्यवहार ॥ १
धर्म्म करण में मनहु न लागे : अकर्म्म करण न लावहि बार ।
छाड़ि सुधारस स्तुति तेरो : पीवहि विषयनि गरल गमार ॥ २
काम क्रोध ममता मन भावे : लोलुपताइ रुचे दुरचार ।
दया शीलके लेश न जानों : नीति न्याय सब दीन्ह बिसार ॥ ३
शरण तिहारो अब हम आये : तुम हो भार उतारणिहार ।
जान अधम जन करे पुकारा : त्राहि त्राहि यीशु जगतार ॥ ४

गीत ॥ १२६

मन मरन समय जब आवेगा

धन सम्पति अरु महल सराए : छूटि सबे तब जावेगा ॥ १
ज्ञान मान विद्या गुण माया : केते चित उरझावेगा ।
मृग तृष्णा जस तृषित आगे : तैसे सब भरमावेगा ॥ २
मात पिता सुत नारि सहोदर : झूठे साथ ठठावेगा ।
पिञ्जर घेरे चौदिश बिलपे : सुगवा प्रिय उड़जावेगा ॥ ३
ऐसो काल श्रम श्वान समान : कर गहो कौन बचावेगा ।
जान अधम जन जो बिश्वासी : यीशू पार लगावेगा ॥ ४

१२७

मन मरन समय निअराता है

नैनन खोले चौदिस देखा : हरदम चिता चिताता है ॥ १
प्रातहि सूर उगे दिग पूरब : सांझ पड़त बुड़ जाताहै ।
चार पहर के जिन्दगी तैसे : बुड़न न देरि लगाता है ॥ २
प्रिय बालक जिहि मातु खेलावत : गोदहि सो मर जाता है ।
बापहि छोड़े मरहिं कमासुत : कोइ कौन रख सकता है ॥ ३
जगमें जेते मरिहैं सबहीं : क्या माया उरझाता है ।
जौन घड़ी में आय बुलाहट : सब का सब छुट जाता है ॥ ४
धन जन तन के कौन भरोसा : छन भर के यह नाता है ।
अमर पदारथ जानहो पायो : यीशु जो मन भाता है ॥ ५

१२८

Gotha or Sicilian.

१ अदमी धूल है घासका फूल है : जलदी वह गुज़रता है ।
आज वह आता कल वह जाता : फूल सा जलदी मरता है ।
२ मौत अमीरों और फ़कीरों : दोनों को उठाती है ।
नौजवानों नातवानों : दोनों को गिराती है ।

गीत ॥

३ बाप आसमानी सब नादानी : दफ़ा कर दिल मेरे से।
होशियारी और तैयारी : आकक़िबत को मूझे दे ॥

१२९

न्याय दिना बर्णन बहु भारी : वाको को जन गैहै ॥
घोर टेर घन मेघन माहीं : तुरही शब्द बजैहै।
चारों दिशते मृतक सुनिके : जीवत सकल उठैहै ॥ १
जल औ थलसों हर्षित धाई : सन्तन सैन्य जमैहै।
खीष्ट धर्म्म पहिने बिश्वासी : सुन्दर बिमल दिखैहै ॥ २
दुष्ट भयातुर मन अतिशोकित : बाएं हाथ करैहै।
अश्रितको प्रभु दहिने राखो : जो तू करुणामय है ॥ ३

१३० Gotha or Sicilian.

१ प्रभु यीशु धरमराजा : अपने राजमें सब ले आव।
अब मिटाव सब देवकीपूजा : बेगसे अपना राज फैलाव।
प्रभु यीशु : अपने राजकी जय कराव ॥
२ आपही सच्चा उंजियाला : करो दूर यह अन्धकार।
धरमात्मा सबपर ढालो : अब जिलाव सब मरणहार।
धरम सूरज : उदय हो अब सभों पर ॥
३ जब जब आपका मंगल बचन : लोगों पास खुल जाता है।
तब दिखाव सच्चाई के लक्षण : झूठ कहीं सब भ्रमाता।
तारणकर्त्ता : आपसे लोग बच जाते हैं ॥
४ बड़ा संग्राम करो अभी : हो सर्वत्र आपकी जय।
जीत शैतान न पावे कभी : करो दूर भक्तों का भय।
प्रभु यीशु : आपके राजकी हो जय जय

१३१ C. M.

१ धर्म्मात्मा तूने सामर्थ्य से : संसार को रचा था ।
तू बोला उंजियाला हो : और उजियाला था ॥
२ देख पापियों के मनोपर : रात कैसो छा रही ।
और केवल तेरी कृपा से : यह रात्री छूटेगी ॥
३ तू उनके मन पर उदय हो : तब उनको सूझेगा ।
कि उनका कैसा पाप और रोग : और उन का आसरा क्या ॥
४ उन्हें सिखा तो योशु पर : वे लावें गे बिश्वास ।
जोत उनके मनमें बढ़ापेगी : आनन्द और ज्ञान और आश ॥

१३२ L. M:

१ हे प्रभु तेरी आज्ञा से : हम मिलके बैठते खानेको ।
तू जैसा बोला शिष्यों से : कि मुझे स्मरण यूँ करो ॥
२ हां योशु तुझे जीवन भर : निरन्तर स्मरण करेंगे ।
और तेरी उत्तम सेवापर : तन मन आनन्दसे सोंपेंगे ॥
३ दाख रस और रोटीका दृष्टान्त : निज देहका तूने दिया है ।
कि मेरे रक्तसे होती शान्त : देह मेरा सच्चा भोजन है ।
४ दे हम लोगोंको सत्य बिश्वास : न खानेमें निष्फलता हो ;
और कृपा कर कि तेरे दास : सब पावें स्वर्गी भोजनको ॥

१३३

मन चित लाये स्मरण कीजे : प्रभु भोजन शुभ निरमाणा ॥
टूकन करि प्रभु रोटी बांट्यो : मेरो तन सम यह तूला ।
बोलि कहो प्रिय शिष्यन खावो : मानो नर मोचन मूला ॥ १
द्राचा रस प्याला ले बोल्यो : यह मेरो लोहू समाना ।
तुमरे कारण दीन्ह बहाए : पीवहु करि दृढ़ अनुमाना ॥ २
प्रेम सहित जो जन यह जेवे : दूरकर्म्मनतें पछिताना ।
भक्ति बिमानहि सो चढ़ि जावे : स्वर्गोहिं शुभ ठाम अपाना ॥ ३
प्रेम बिचारी यहमन मानो : बिस्वासहि करु अन पाना ।
जान अधम प्रभु योशु दीन्हो : निज जनको यही निसाना ॥ ४

गीत ॥ १३४

यीसू की मुसीबत जिस दम तुम्हें सुनाऊं।
आंखोंसेतो मैं आंसू क्योंकर नहीं बहाऊं ॥ १
दुशमन जब उसको पकड़े बेआबरू कैसे किये।
औ मानिन्द चोरको बांधके उसे शामिल अपने लिये ॥ २
मुंह पर भी उसके थूके और ठट्ठे में उड़ाए।
बुराइयां उसकी करके सलीबको तब धराए ॥ ३
और मारनेको ले जाके कपड़े भी सब उतारे।
हाय हाय अफ़सोस की जा है लोगोंने ठट्ठे मारे ॥ ४
लोहे की मेखें ठोंकके हाथ पाओं को उसके फोड़े।
सलीबको झटका देके बंद बंद उन्होंने तोड़े ॥ ५
हाय हाय यह क्या अजीब है गुनाह तो था हमारा।
पर मौत रसीदा हुआ खुदा का बेटा प्यारा ॥ ६
ईमान अब उसपर लावें सब लोग जो सुननेवाले।
महबूब औ शाफ़ी जानके भरोसा उसपर डालें ॥ ७

१३५

दया करहु हे दया निधाना

बर कन्या तुम सनमुख ठाढ़े : जांचे तुम बर दाना ॥ १
नर निमित नर पांजर बेधे : प्रभु नारी निर्माना ।
सुखी भये नर नारी देखे : यह सद ग्रन्थ बखाना ॥ २
होय प्रभु हम सब के संगी : करहु कन्या दाना ।
बनी रहे यह जोड़ी प्रभु जी : जौं लौं धारहि प्राणा ॥ ३
भक्ति सुधारस पान करावहु : करें सदा तुम माना ।
प्रेम नियम सत पालन करिके : पावें स्वर्ग निदाना ॥ ४

१३६

१ जिसे खुदावन्द खुशी दे : वह सच मुच है खुश हाल ।
जो करे बग़ाह खुदावन्दमें : सो सच मुच माला माल ॥
२ इन दोनों पर खुदा वन्दा : जो करेंगे निकाह ।
हम तुझसे मिन्नत करतेहैं : तू उन पर कर निगाह ॥
३ वे जोरू खसम होने को : अब करें कौल करार ।
पर तुझसे बरकत पानेको : हैं दोनो उम्मेद वार ॥
४ जहां तू दिल को करे शाद : वां सच्ची शादी है ।
जिस घरको करे तूआबाद : वां खूब आबादी है ॥
५ जैसे गलील के काना में : तू ब्याह में था मिहमान ।
वैसे इस वक्त भी हाज़िरहो : इस ब्याह के दर मयांन ॥
६ और अपनी खास हुजूरी से : कर दोनो खुश तरीन ।
जब निकाह में बोलें हां : तब तू भी कह आमीन ॥

१३७

Around the throne of God in Heaven.

१ हज़ारहा लड़के खड़े हैं : खुदाके तख्त के पास ।
मुहब्बत से वे भरे हैं : और पाते खुश मीरास ॥
कोरस:— गाते सना सना सना— सना हो खुदावन्द की ॥
२ साफ़ होके सब गुनाहों से : वे रहते हैं खुश-हाल ।
पियारे हैं खुदावन्द के : वे गाते हैं निहाल ॥
३ किस तरह पाया लड़कोंने : वह उमदः पाक मुकाम ।
वे बचके सब तकलीफ़ों से : खुश रहते हैं मुदाम ॥
४ इस सबब से कि ईसा ने : बहाया अपना खून ।
वे धोके उस में फ़ज़लसे : आस्मान पर हैं मासून ॥
५ खुदावन्दको इस दुनियापर : पियार वे करते थे ।
सो अब हमेशः उसके घर : वे खुर्रम रहेंगे ॥

१३८

When mothers of Salem.

१ जब लड़कों को मायें खुदावन्द के पास लाईं ।
शागिर्दों ने तब तुन्द हो करके रोका उन्हें ॥
पर यीशु ने तब गोद में ले ।
यह कहा बड़ी उलफ़त से ।
ऐसे छोटे लड़कोंको पास आने दो ॥

२ मैं हाथ रखकर सिर पर अब उनको बरकत दूंगा ।
मैं हूं चौपान इन बच्चों का वे क्यों जावें दूर ॥
मैं उनके दिल को लेऊंगा ।
और बरकत उनको देऊंगा ॥
ऐसे छोटे लड़कों को पास आनेदो

३ आह कैसी मुहब्बत खुदावन्द ने की ज़ाहिर ।
उन बच्चों को मुहब्बत से बुलाया करीब ॥
पस दिल से कोशिश होवे अब ।
और मिलकर हम भी कहें सब ।
ऐसे छोटे लड़कों को पास आने दो ॥

१३९

Jesus loves me this I know.

१ यिसू करता मुझे प्यार : यह मैं जानता तन ख़ाकसार ।
छोटे बालक उसके हैं : वे कमज़ोर पर वह बिजै ॥
कोरस:— प्यार करता मुझे
यह बैबल से आशकार ॥

२ यीसू करता मुझे प्यार : मूआ था बिहिश्त का द्वार ।
खोले और बख़्श दे गुनाह : मुझे ले अपनी पनाह ॥

३ यीसू करता प्यार आज तक : गरचि मैं कमज़ोर नापाक ।
अपने नूरके तख़्त हो से : मेरी ख़बरगीरी ले ॥

४ यीसू कर तू मुझे प्यार : रह तू मेरे पास हर बार ।
और जब मरने को तैयार : अपने घर में रख ऐ यार ॥

१४०

१ हे पियारो पाप से भागो : जैसा सांप है तैसा पाप ।
हे पियारो जल्दी दौड़ो : प्रभु तलक छोड़ दो पाप ।
जल्दी दौड़ो : जल्दी दौड़ो छोड़ दो पाप ॥

२ हे पियारो याद में रखो : जैसा लूत था तैसे तुम ।
हे पियारो देर मत करो : प्रभु तैयार है आव तुम ।
देर मत करो : देर मत करो अब आव तुम ॥

१४१

Art thou weary.

१ क्या तू मांदः और दिलगीर है—सख़्त मुसीबत से ।
मुझ पास आ एक कहता तुझको—राहत ले ॥

२ क्या वह कुछ निशान भी रखता—जो वह हादी हो ।
हाथ और पांव में देख तू उसके—ज़ख़मों को ॥

३ क्या वह कोई ताज भी रखता—मानिन्द शाहनशाह ।
हां एक ताज है उसके सिर पर—कांटों का ॥

४ गर मैं उसके पीछे चलूं—हिस्सः मिले क्या ।
दुःख मुसीबत रंज और मिहनत—और ईज़ा ॥

५ गर हमेशः पास रहूं मैं—आख़िर क्या मिले ।
राहत कामिल और पार होंगे—यर्दन से ॥

६ गर उसके नज़दीक मैं जाऊं—क्या वह रोकेगा ।
हरगिज़ नहीं गो सब आलम—हो फ़ना ॥

७ क्या मैं उसके पीछे चलके—बरकत पाऊंगा ।
रूहें सब और पाक फ़िरिश्ते—कहते हां ॥

१४२ गीत ॥

Baby Song

१ मेरा छोटा बाबा : जल्दी से सो जा ।
तू है पियारा बच्चा : अपनी मामा का ॥

२ आंखें भारी हुईं : उन्हें बंद कर ले ।
सो जा मेरा बच्चा : निषचिनंताई से ॥

३ तू तो सो जायगा : मामा जागेगी ।
ऐसा तू न जानना : मामा भागेगी ॥

४ मामा से भी बड़ा : एक है तेरे साथ ।
यीशु तेरे ऊपर : रखता अपना हाथ ॥

५ उसके स्वर्गी दूत भी : अब हैं तेरे पास ।
लड़कों को बचाने : हैं वे उनके दास ॥

६ मेरी आंखकी पुतली : बच्चा मत घबरा ।
जल्दी आंखे मुंद ले : जल्दी से सो जा ॥

Hymns not in First Edition.

१४३ गीत ॥

The HOLY Trinity

Presbyterian Book of Praise No I

१ पावन पावन पावन शक्तिमान परमेश्वर ।
आप के पास हमारी गीत भोर भोर को उठेंगीं ॥
पावन पावन पावन बलवन्त और कृपालु ।
एक जो है तीन में, एक ईश्वरता में तीन ॥

२ पावन पावन पावन सिद्ध लोग करके पूजा ।
कंचन मुकुट डालते हैं बिल्लौर के सागर पर ॥
दूत लोग और करूबीन आपके साम्हने गिरके ।
जो हुआ, है, और होगा सर्वदा ॥

३ पावन पावन पावन आप जो होवे छिपते ।
महिमा अपाना जो नयन से अलख रह ॥
केवल आप हैं पावन दूसरा है ही नहीं ।
नेम प्रेम में पूरा, महत्त में अपार ॥

४ पावन पावन पावन शक्तिमान परमेश्वर ।
मनडल भूमि जल में सब गाते गीत असीम ॥
पावन पावन पावन बलन्त और कृपाल ।
एक जो है तीन में, एक ईश्वरता में तीन ॥

(सेरा: ई· मार्टण· तुनापुना ।)

१४४ गीत ॥

१ किस पास जावे पापी जन : किस से पावे मुक्त का धन
किस से कटे मनका दुःख : किस से मिले प्राणका सुख।
२ न मनुष्य तो कहीं है : स्वर्गी दूत भी नहीं है
पापी को जो आश्रा दे : उस को ढूंढ़ें कहां से
३ मूरत मंदिर देवतास्थान : तीरथ दर्शन पुन्य और दान
इन से प्राप्त नहीं कुछ : ठहरे सब बेअर्थ और तुच्छ।
४ प्रभु ईसा दयावन्त : उससे जीवन है अनंत
उस पर लावे जो बिश्वास : सोही रखे मुक्त की आस।
५ प्रभु ईसा तुझही पर : आस रखूंगा जीवन भर
स्तुति तेरी गाऊंगा : तुझ से शान्ति पाऊंगा।
६ जब बैकुण्ठ को जाना हो : देखूंगा जब तुझही को
तब कहूंगा हे ईसा : तेरे द्वार मैं बच गया।

१४५

Just as I am.

१ जैसा मैं हूं बग़ैर एक बात : पर तेरे लहू से हयात
और तेरे नाम से है नजात : मसीह मैं आता हूं।
२ जैसा मैं हूं कंगाल बदकार : कमज़ोर नालाइक़ और लाचार
अब तेरे पास ऐ मददगार : मसीह मैं आता हूं।
३ जैसा मैं हूं कमबख़्त नापाक : और मेरी हालत दहशत नाक
लड़ाई भीतर बाहर बाक : मसीह मैं आता हूं।
४ जैसा मैं हूं क़बूल कर ले : मुआफी और तसल्ली दे
सिर्फ़ तेरेही वसीले से : मसीह मैं आता हूं।
५ जैसा मैं हूं तेरा पियार : मुझ से उठावेगा हर भार
और बरकत देगा बेशुमार : मसीह मैं आता हूं।

१४६ गीत ॥

The Sands of time are sinking.

१ संसार का दिन ढल जाता : और स्वर्ग का है बिहान
जिस भोर की आस मैं रखता : वह भोर अब है जोतमान
रात थी बहुत अंधेरी : अब करता दिन प्रवेश
और बिभव--बिभव रहता : इम्मानुएल के देश ।

२ मसीह है प्यार का सोता : उस जल की क्या मिठास
संसार में उस को चखा : स्वर्ग में बुझेगी प्यास
वहां एक बड़ा सागर : है उसका प्रेम अशेश
और बिभव बिभव रहता : इम्मानुएल के देश ।

३ मसीह है मेरा प्यारा : वह मुझे करता प्यार
जेवनार के घर में लाता : अशुद्ध और दुराचार
मैं उस पर रखता आसरा : और होगी आस बिशेश
जहां वह बिभव रहता : इम्मानुएल के देश ।

४ मैं स्वर्ग की ओर बढ़ गया : जब हुई बयार प्रचंड
अब थके पथिक नाईं : जो टेकता अपने दंड
आयु के संध्या समय : ज्यों मौत का है सन्देश
मैं बिभवोदय ताकता : इम्मानुएल के देश ।

१४७ गीत ॥

The Light of the World.

१ जब दुनया तारीकी में डूब गई थी
इस दुनया का नूर है येसू
खुदावन्द की रोशनी तब खूब आई थी
कि दुनया का नूर है येसू।

ऐ गुनहगार इस रोशनी में आ
तेरा गुनाह वह दूर करेगा
अब देखता हूं गर अंधा मैं था
कि दुनया का नूर है येसू

२ मसीही न होवें तारीक और उदास
कुल्ल दुनया का नूर है येसू
वे रोशनी में चलते हैं येसू के पास
कि दुनया का नूर है येसू।

३ ऐ तुम जो गुनाह और तारीकी में हो
इस दुनया का नूर है येसू
अब उठके यह बरकत खुदावन्द से लो
कि दुनया का नूर है येसू।

४ आसमान में भी सूरज न होगा ज़रूर
उस दुनया का नूर है येसू
उस सोने के शहर में येसू है नूर
उस दुनया का नूर है येसू ।

१४८ गीत ॥

Communion

१ जिस रात को पकड़ा जाता था : कि मारा जावे क्रूस उठा
प्रभु यीसू ने रोटी ली : और करके धन्यबाद तोड़ दी।
२ वह शिष्यों से यों बोला तब : देह मेरी लेओ खाओ सब
और जब जब ऐसा करते हो : तबमेरा स्मरण सदा हो
३ कटोरा भी उस ने उठा : फिर धन्य माना पिता का
तब उसे दिया उन के हाथ : और बोला अत्यंत प्रेमके साथ।
४ यह नये नेम का लहू है : जो मेरी देह से बहता है
तुम पीओ सब बिश्वासियो : और मोक्ष की पूरी आसा हो।

१४९ गीत ॥ Sandon

१ उठा के आंख तरफ पहाड़ों की उम्मेद रखूं
मेरी नजात कहां से आवेगी किस से मांगूं
खुदावन्द ही से मदद है मेरी
आसमान ज़मीन का ख़ालिक है वही।
२ वह तेरे पांव को फिसलने कभी न देवेगा
जो खबरदारी करता है तेरी न ऊंघेगा
देख इसराएल का निगहबान खुदा
नऊंघता है न कभी सोवेगा।
३ हमेशा करता तेरी रखवाली खुदावन्द ही
खड़ा है तेरे दहने हाथ पर भी आसरा वही
न दिन को धूप कर देगी तुझे घात
न चांद तेरा नुक़सान करेगा रात।
४ हर एक बुराई से हाफ़ज़ि अबदी बचावेगा
सहीह सलामत दिल औ जान तेरी वह रखेगा
हां तेरे जाने आने में रक्षा
कर देगा अब से अबद तक खुदा।

१५० गीत ॥

हो तो तुम्ही सबके स्वामी : तुम्ही संसार बनाया है ॥
सूर निशाकर औ गण तारा : गगण सुमण्डल निर्माया है ।
देखो भूपर रंग रंग के : फल फूल रुचिर जन्माया है ॥ १
जीव चराचर जे जगमाही : नाना विधस रूप धराया है ।
अन्न पान निशि बासर ताको : यथा योग तू पहुंचाया है ॥ २
जन्म मरण सब तुम्हरही हाथे : द्वारा भावहि बिलगाया है ।
कर्त्ता स्वामी सबके तुम्ही : नर मूर्ख ढूंढ भुलाया है ॥ ३
पूजत नाहक देव अनेकन : कृतघ्न ममता हिय छाया है ।
अभ्यन्तर में सत जोत बरत : झूठे तौं जग भ्रमाया है ॥ ४
साथहि अपने आपन देखे : विषय फांस अस उरझाया है ।
जानक ज्ञान करो उजियारा : चरणन तेरो सिर नाया है ॥ ५

१५१

ईश्वर महिमा ध्यान करो मन : सुखदायक बिस्तारा ॥
आदो गगण माहिं परमेशा : तेजस जोत पसारा ।
रैण दिना शशि सूर बड़ाई : करहीं नित प्रचारा ॥ १
जलचर बनचर नभचर जोई : कोटि कोटि संसारा ।
तिनहि खोलिकर जगपति दाता : सब दिन देत अधारा ॥ २
निर्मल नीर दूर तें लाई : सघन मेघ के द्वारा ।
सूखे भूतलपर बरसावत : जातें हो हरियारा ॥ ३
अन्न अनेक सरस फल नाना : स्वादित बहु प्रकारा ।
प्रभु प्रतिदिन सब जग उपजाई : करत महा भंडारा ॥ ४
आश्रित अधम कहांलग गावे : ईश्वर शक्ति अपारा ।
परमानन्द कन्द गुण मानो : हे मन बारंबारा ॥ ५

१५२

प्रभु गति ऐसी अद्भुत तेरी : नरन्हि को ना बूझि परे ॥
पाप परायण जिन्हि जग जाने : धन जन से तसु कास भरे ।

गीत।

भक्तन तेरो टूकन जाचें : शाक अलोने पेट भरे ॥ १
वृद्ध भये पर जीव धरावे : रोगन तें जो गात झरे ।
तरुणन्हि सुन्दर पुरुष कमासुत : छणमह व्याधिहि प्राण हरे ॥ २
तेरो महिमा अकथ अलौकिक : जीव चराचर साचि भरे ।
राई सों पर्बत प्रभु तुमहीं : औ पर्बत सो राई करे ॥ ३
भूत भविष्य जेहि एक समाना : आदि न अन्त न देख परे ।
कोटि जगत नहि धारिसके जिहि : नर तन मों सो बास करे ॥ ४
प्राण दियो अपराधिन कारन : अचरज तासन काहु बड़े ।
जान अधम योशू गति प्रेमी : प्रेमहि तें गति खुलि पड़े ५

१५३

जय जगतारक प्रेमनिधाना : तोहि बखान करूं मैं ॥
योशु दयालु त्राण तुम कीयो : नित नित गुण गावूं मैं ।
तुम मम हेतु प्राण निज दियो : अद्भुत प्रेम कहूं मैं ॥ १
मोहि अधमपर क्यों अस नेहा : कैसो धन मानूं मैं ।
कैसो तोर प्रेम हित सन्ते : सेवा भजन करूं मैं ॥ २
हे प्रभु मम सब काज निकम्मे : तुहरो आस धरूं मैं ।
जौलगि देह सहित जग जोवूं : तुहरे चरण गहूं मैं ॥ ३
प्रेम पदार्थ तुम मह बसहो : करुणानिधि सुमरूं मैं ।
मोहे दोउ लोक सुधरे हैं : जो प्रभु आश्रित हूं मैं ॥ ४

१५४

देखो खीष्ट राज किमी बाढ़त : भोरे जिमि उजिआरा ॥
गुरु पद ले नर निज मत रोपत : करहों पाप अपारा ।
सत जो मत प्रभु योशु निरूपा : तासों जगत उधारा ॥ १
स्वर्ग भुवन नर तारक जोई : लियो राज अधिकारा ।
शिष्य साहस करि देश बिदेशहि : राज बचन प्रचारा ॥ २
चौदिश जग में होत बचनतें : लाखों जन निस्तारा ।
अधम दास बिनती सुनु प्रभुजो : बशमें करु जग सारा ॥ ३

१५५

समीप भई प्रभु महिमा : यीशू जग अधिकारी ॥
तिमिर रात जग माें अस छाई : भूले सब संसारी ।
धर्म राज रवि प्रबल होगा : लज्जित देव पूजारी ॥ १
यीशू शिष्य अब निन्दित जगमें : कौन करत पूछारी ।
हर्षित हो प्रभु गुण तब गैहैं : शत्रुन पर जयकारी ॥ २
ख्रीष्ट गान धुनि घर घर टेरे : प्रेम सहित नर नारी ।
ख्याति सुनत सरणागत ह्वैहैं : ठठके ठठ इकबारी ॥ ३
युद्ध उपद्रव लोपित जगसों : सर्व लोग हित कारी ।
खड्ग तोड़ हल फाल बनैहै : बनमें बहु फुलवारी ॥ ४
प्रभु निज दुख फल लखि हरखैहैं : धन्य धन्य जगतारी ।
आश्रित बिनती सुनहु दयालू : झट हो प्रण अनुसारी ॥ ५

१५६

प्रभु जू ऐसी कुमती हमारी

असन बसन के तुमहीं दाता : दुख सुख मोर गोहारी ।
कंचन द्वारा तेरो लांघे : झोंपड़ि हाथ पसारी ॥ १
अमृत भोजन छाड़ि बिमुढ़े : कर नित गरल अहारी ।
कंठहि उतरत तन मन ग्रासत्री : कोउ न करे पुछारी ॥ २
भूलि सुमंत्रण जीवद तेरो : जिमि यीशू प्रचारी ।
बहु बिधि मंत्रणि प्राणहि घालक ; कीन्हे जपना भारी ॥ ३
त्राण दिवैया सतत्र बिधाता : प्रभु यीशू जग तारी ।
जान जगत तिहि त्यागि सेवत : देवनि बहु प्रकारी ॥ ४

१५७

* मनुआं भुले नर तन पाई *

नीतक सासन अजहु न मानत : फिरत मुख मुसकाई ।
बाला पन तुम खेलि गंमायो : धूरी मुखर लपटाई ॥ १
लट्टू गेनन गुडी उड़ावत : दोसर को समताई ।
तरुणापन तरुणी के पाछे : तन मन धन बिनसाई ॥ २
मदन सुरा निसि बासर पीए : चैन न छन भर पाई ।
केश भये अब श्वेत तिहारो : टूटि दसन मुख जाई ॥ ३
तेजी चले सुत हित मित नारी : भूठे तब पछताई ।
ज्ञान प्राण सनमान गईरी : नाहिन कछु बनि आई ।
जान अधम बिनु योशु सहाए : चलत न मन सुढ़ताई ॥ ५

१५८

कोटि यत्न करि थाकि मरे नर : पाप चले नहि तिनके मनको॥
मेहदी दलमें जस लालि रहे : कारी कम्बल में ऊननको ।
पाप परायण नर मन तैसा : नहि युत धोय चले बर्णन को १
तीर्थ तप पूजा ब्रत धारण : जोग जपत कै परकाणको।
लाखन बलि दै सुरति रिभावत : रीभतकी बुत शिल काठनको २
देव सुनावत करि करि किर्त्तन : ध्यान लगावत कै पहरणको।
जोरि धुनी नर तनहु जरावत : उत्पादक यह सब पोड़नको ३
बेद पुराण कुराण बतावत : बहु बिध मारग मत मारणको।
जैसे आंधर अंध दिखावत : अंधराइ धरे बट कूपनको ४
दुर्गति देखि दयायुत योशू : भौ बलिदाना अघ बारण को।
जान अधम नहि आन उपाए : ढूंढि मरो तुम नर तारणको ५

१५८

कौन सुख जगमें नीको जी।

हेरहि देखो निज नयननतें : टारि कपट हीको जी॥ १
विद्यासों नहि है किछु आना : जग मान अधीको जी।
जाके प्रापै चैन न पैहो : मन पूरण दीको जी॥ २
धन संगोरण लोभक कारण : शान्ति तन बीको जी।
किछु बित संगहि जो सुख आए : नहि दुइ दिन टीकोजी॥ ३
नारी सुत हित कुलके माया : कौन कहे ठीको जी।
संसार बिना भजन भगवान : जान अधम फीको जी॥ ४

१६०

योशुको पंथ सुहेलो अहो जन

पूजा दान प्रतिष्टा पोथी : जप तप ते नहीं तारण।
जगत पिताको प्रेम दया हित : यही मोक्ष के कारण॥ १
भूले पंथ कुपंथन माहीं : भटक भटक पछिताहीं।
प्रभु योशू की कृपा सेती : आनन्द मंगल गावें॥ २
आवो सबजन भै मतिकरियो : भाजो पापन सेती।
जो तुम राखो सब तुछ हैगो : जगमें सम्पति जेती॥ ३
सांच हिये में करुणा राखो : योशु प्रेम में भरके।
मोक्ष मिलेगो प्रभु कृपासुं : भवसागर सुँ तरके॥ ४

१६१

मन जगमें भटकि मरे काहे

नाथ जगत के योशु पदार्थ : क्यों ताही न धाइ धरे।
जीवन मरण हाथ में जाके : ताको नहि मूल करे॥ १

दुःख सुख दोनो वाके बशमें : इत उत के भूप बड़े ।
नाहिन तिहि सेवत नरमूर्ख : भ्रमित अघ कूप पड़े ॥ २
अन्त समय के यीशु बिचारक : नहि तासों अरज करे ।
बिषयन मद माता निश बासर : आखिर पछताइ मरे ॥ ३
नरक स्वर्ग के मालिक यीशू : क्यों नेह न ताही करे ।
दास अधीन चरण पै निहुरत : तुअ बिनु को कृपा करे ॥ ४

१६२

तन पाए चेतो रे भाई : जीवन जग दिन थोर ॥
ज्ञान सहित तुम मनमह हेरो : है को तुअ जिवदाए ।
पालनिहारो है को तेरो : कदहु कि चिन्ता आए ॥ १
निरखनको तुम नयनन पायो : तसु महिमा जग आए ।
करण कथा शुभ सूनन वाके : रसना तिहि गुण गाए ॥ २
ये सबके सुधि मूढ़ बिसाख्यो : ममता मान फुलाए ।
बिषय बिबस जड़ जन्म सिरानो : मरण समय नियराए ॥ ३
देरि करो मति अवसर पाए : क्षणमें तन छुटि जाए ।
जान अधमको यहि टुक आशा : है प्रभु यीशु सहाए ॥ ४

१६३

तन पाए सोचो रे भाई : क्षण क्षण होत अबेर ॥
सुन्दर मुखड़ा दर्पण देख्यो : देख मग्न मन भाए ।
भूषण बसन सुभूषित कीन्हा : क्षण में सो कुम्हलाए ॥ १
कोटि जतन करि राखन चाहो : बिबिध रसायन खाए ।
कफ पित बात भरे यह गाता : झूठे आश बढ़ाए ॥ २
सुत हित सम्पति परिजन नारी : प्रेम बिबस उरझाए ।
निज घरके सुधि भूलि बिमूढ़ा : भ्रमत मुसाफिर नांए ॥ ३
चलन समय जब आए तेरो : कम्पित हिय सकुचाए ।
जान अधम जों यीशु तरैया : क्या करिहें मृतु आए ॥ ४

गीत १६४

अवगुण मोर न लेखन जाए : नाहिन लेखन जाए रे॥
जन्मतहोतें तव अपराधी : रोम रोम अघ छाए रे।
छण छण जैसे बयसहि बाढ़त : तैसहि पाप सुभाए रे॥ १
मन बच काया से निशि बासर : अशुभ करण हम धाए रे।
तारणिहारक नाम न कबहू : शुभ मनतें हम गाए रे॥ २
कोटि कोटि अघमय हिय मेरो : तारणितें अधिकाए रे।
योशु दिनकर भौ प्रगासा : दोन्हो सकल नसाए रे॥ ३
युग युग तेरो गुण हम गैहों : हो तुम परम सहाए रे।
जान अधम यहि अवसर पाए : शरण तिहारो आए रे॥ ४

१६५

दुहु कर जोरे हौं प्रभु ठाढ़े : बिनती मेरो लीजै ।
क्रूर कुटिल अपराधी द्रोहो : ठहरावे मन नीजै ॥ १
नाम बिदित तव अधम उधारण : ताके पछ अब कीजै ।
पाप पुण्यके जनि जांचन करहु : फोए बन्धन दीजै ॥ २
आप न गाये शुभ गुण तेरो : सुनि अनमुख मन खीजै।
विषयन रस माते निश बासर : छण छण जो तन छीजै ॥ ३
शठ अपराधी हौं हम निश्चय : तातें छेमा कीजै ।
जान अधम जड़ जाए तबही : उत्तर जबही दीजै ॥ ४

१६६

जगतारक कत हम जावें : शरण तेहारो छाड़िके ॥
अशरणके शरणागति तुमही : अधम उधारण नामी ।
पापी दीनन कत तुम तार्‍यो : करुणा निधि अनुपामी ॥ १
सकल शरीरक जीवनदाता : शिशु के रच्छा कारी ।
अबल महाके बल देवैया : दुःखितन के दुःखहारी ॥ २
उमड़त जोर जुआपन जबही : तीर चलावत कामा ।
तबही के तुम राखनिहारा : का करिहै रुचि भामा ॥ ३
व्याधि विविध जब घेरत आए : पड़े अशक्त जब काया ।
बृधनके तब बांह गहवैया : तेजत जब सुत जाया ॥ ४
तीनों पनमें तुमही साथी : तुमपर जो मन लावे ।
जान अधम ऐसो खल पापी : सदगत सोऊ पावे ॥ ५

१६७

खीष्ट बिमुख जो जन दुरचारी : जन्म अकारथ सोउ बितावे ॥
यीशू प्रेम रतन जिन पाई : तिनको जग धन नहि ललचावे ।
हर्ष उमंग रहे नित उनको : धर्म धीर बिश्वास जुगावें १
भक्ति रूप अस जासु न होई : झूठे सो प्रभु दास कहावे ।
प्रीयो सब निज हिरद बिचारो : कोउ न अपना मन बहकावे २
प्रेम अमित सम्पद जो राखे : सहि दुःख संकट नहि अकुलावे ।
उमड़त हिया बहत सुख धारा : और न मनहुं निहाल करावे ३
प्रभु जो दास निवेदन सुनिये : अधम हिया फिर भटक न जावे ।
पाप परीछा प्रभु सब टारो : निबल कुपुत्र सुपुत्र कहावे ४

१६८

मसीहको देखि यात्रा करो : जगके बिलास से मन फिरो ।
यीशु मसीहा पापिन त्राता : बिश्वास ताहिपै मन धरो ॥ १
यीशु तिहारे हेत मुत्रा है : निज क्रूश ढोयके मन मरो ।
यीशु अकेले अघ जग जीत्यो : उसके सहाय से मन लरो ॥ २
ईश्वर आगे बिनवत यीशु : जनि मृत्यु कालतें मन डरो ।
आश्रित ताको कबहु न छोड़े : अस नेम बांधके मन तरो ॥ ३

१६९

प्रभु जी मोहि प्रेम कर देखो : राखो पाप नियारा हो ॥
ईश्वर का अवतार भयो तुम : पापि हित बलिदाना हो ।
धर्म्म आत्मा मोपर ढालो : हे प्रभु दयानिधाना हो ॥ १
निश्चय हो तुम सबका ईश्वर : सब जग जनका स्वामी हो ।
मम अवगुणतें मोहि बचावो : हे प्रभु अन्तर्य्यामी हो ॥ २
सीस नवत हूं बारंबारा : तुम बिन को सुखदाता हो ।
मेरे मनकी आश पुरावो : हे पापिन के त्राता हो ॥ ३
नित्य रहो प्रभु मम रखवारा : तुम अस प्रेमी नाहीं हो ।
भूल न जावे निर्बुध हिरदै : या कंटक बन माहीं हो ॥ ४
कृपा करि बुध बल दे मोहे : निज महिमा अनुसारी हो ।
यश हो तोहे आश्रित होवे : स्वर्ग भुवन अधिकारी हो ॥ ५

१७०

जीवन है अति सुखद सुमंगल : यीशू बिधि अनुसारा हो ॥
पाप घटा चहु ओरे छायो : जगत भयो अंधियारा हो ।
यीशु बचायो तब ही आए : रक्त बहाए धारा हो ॥ १
उन्हपर जो लावे बिश्वासा : सोई ईश्वर प्यारा हो ।

यीशु कहावे शुभद मिलापी : नित्य जीव प्रचारा हो ॥ २
स्वर्गनिवासी भी अगुआये : ठाम करण तैयारा हो ।
जीव मुकुट बिश्वासिन कारण : कर ले करत पुकारा हो ॥ ३
तोर चरण पर लौ लाए मैं : हाथ अधीन पसारा हो ।
हो तुम दीनदयाल प्रभु यीशु : अब कीजे निस्तारा हो ॥ ४

१७१

यीशु बचन गुण बहु बिस्तारा ॥

या जग घोर गहन बन माहीं : सत पथ होइ बतावनहारा ।
भय भ्रम दुःख औ पाप तिमिरमें : चमकत वाति शुभ उजियारा १
बचन सुहावन पावन दर्पण : जहं देखि प्रभु रूप पियारा ।
बल निरबलको सुख शोकितको : देत सभन को सुसमाचारा ॥ २
ईश्वर धन्य बचनका दाता : धन्य अनादि बचन अवतारा ।
धन्य आत्मा ज्ञान दिवैया : यश गावो आश्रित हर बारा ॥ ३

१७२

इत उत मेरो केश पकाना : दर्पण देखे मन पछताना ॥
ज्योति गई घट दो नयननकी : नाहि सुने स्वर नीके काना ।
सूंघि सके नहि फूलन नासा : रसना भूले रस रुचि नाना ॥ १
पर्शत दो कर कांपन लागे : बाट चलत चरणन भ्रमाना ।
देह भयो तेरो अब जरजर : तदहु न चेत्यो मूढ़ नदाना ॥ २
हित मित केते जग अपनायो : धन सम्पत्तिके कौन ठिकाना ।
गात भये अब दुर्बल तेरो : खाट पड़े तब क्या पछताना ॥ ३
देखि दशा सुत नारी प्यारी : मुख निज फेरहि घिन मन माना ।
रोगी जान रसायन ढूढ़त : मिलि गौ मध यीशू गुण गाना ॥ ४

गीत ॥ १७३

जो तनको तन कहे अपाना : भूलि रहे सो मूढ़ नदाना ॥
भोर जैसे बिगसत फूलन : सूर उदित शोभा सुरझाना।
जात सुरभि तैसे यह काया : कोटि जतनतें नहि बिलमाना ॥ १
शीत पड़त जैसे निश भूपर : रौद तपनतें शीत उड़ाना।
जैहे उड़ि तैसे तन तेरो : रहिहै नाहिन यको निसाना ॥ २
पवन गिरावत तरु दल जैसे : माटी में तब पात मिलाना।
हाड़ मासु के तन तस मानो : आखिर माटीमें पच जाना ॥ ३
चेत करो तब मूर्ख मनुआ : फिरत फिरै नाहक बौराना।
जान अधम बरजत कर जोरि : मानो न मानो शोक अपाना ॥ ४

१७४

बास नगर नहि इते हमारो।

सुनि अस दुर्जन मन शोक भरे : हर्षे सन्त अपारो ॥ १
ये संसार सराय समाना : जहं निश बास सुधारो।
पंथी सम धरु कंथा मनुआ : बाट गहो बिन भारो ॥ २
पहुंचब कब हम भवन आपनो : मति अकुलाय उचारो।
धैर्य्य धीर धरो मन माहीं : काटहु दुइ दिन चारो ॥ ३
जो नहि बास निरास मति होहु : प्राण दयो जग तारो।
बास जहां निज तहां बसैहौं : भक्तन जो मम प्यारो ॥ ४
इते नगर में त्रास घनेरो : उते अभय सुख सारो।
जान अधम जौं दिब धाम चहो : यीशू शरण सिधारो ॥ ५

१७५

जो जन पाए स्वर्ग निवासा : तिहि गति को बर्णै पारै ॥
हाड़ मासु शोणित तन त्यागो : व्याधि बिबिधके जो भारै।

तेजसरूपी निर्मल देहा : परमानन्द दायक धारे ॥ १
क्षुधा पिपासा कबहु न ताको : शीत उष्ण नहि तन ताड़े।
शोक बियोगक कबहु न जाने : होहि न कछुओ रूपहारे ॥ २
खल जन के लव लेश न जाने : नित सन्त समाज सुधारे।
योशु गुण गान करें निरन्तर : तृप्त प्रभु रूप निहारे ॥ ३
आंख न देख्यो कान न सून्यो : मनहु न कछु आव बिचारे।
जान अधम लह सुख अस ताको : जाको प्रभु योशु उबारे ॥ ४

१७६

कहो वही कथा पुराणी अब : जातें पावों त्राणा हो ॥
सूननको अभिलाष बड़ो है : करो तृप्त मम काना हो।
अबल अबोधे शिशु सम जैसे : तैसहि जानि सिखाना हो ॥ १
धीरे धीरे कथा सुनावो : रस रस अर्थ लगाना हो।
हौं मैं मूर्ख मूढ़ असीमि : सो न चहै बिसराना हो ॥ २
बार बार मोसों कथा कहो : पल पल मोहि चिताना हो।
जावों भूलि न कथा मनोहर : योशु चरित बलिदाना हो ॥ ३
अन्त काल जब आव बुलाहट : दिव्य धाम दर्शाना हो।
तब स्मरि वही कथा पुराणी : जान चलहि हर्षाणा हो ॥ ४

१७७

पार लगावो बेड़ा : तुम बिनु नाहिन आन सहाए ॥
अगम्य अपार समुद्र माझे : डगमग नौका मेरा।
घोर चलत चौवाई तापर : कारि घटा घन घेरा ॥ १
संग सखा सब करत कुलाहल : देखि तरंगनि खेरा।
काह करो मैं अब जाऊं किधर : चौदिश लाग अंधेरा ॥ २
पैदर धाये जलनिधि माझे : काढि लयो निज चेरा।
बेरि पड़त जब जब निज जनको : सहाय तब तिनकेरा ॥ ३

नूह उबाखो नाव रचाए : स्मरि सोइ हम टेरा।
देरि करो मति जानक बेरो : देत दुहाई तेरा॥ ४

१७८

ऐसी खेती करहु किसाना : अमृत फल जो देता है॥
यहि खेती के पोत न लागत : वायव कोउ न लिखता है।
कोउ न लेखा जोखा करता : कट्टा धूर न गुणता है॥ १
रौदौते यह जरो न जावे : झड़िअनते नहि दहता है।
जंगल झाड़ न जेहि बिगाड़े : चोर चुहा नहि हरता है॥ २
प्यादा पयक न करे तक़ाज़ा : दस्तकसे न डरौता है।
लौन करो जब चाहो हासिल : कोउ न कछु कह सकता है॥ ३
मालिक तेरो है प्रभु योशु : अरजो सबका लेता है।
जान अधम तब देर न करना : औसर बोता जाता है॥ ४

१७९

जनम अकारथ बोतो हो लोगो : जनम अकारथ बोतो॥
बाला पन नित खेलि सिरायो : जौबन जाया प्रोती।
लालच लोभहि केश पकायो : तिहु पन गत यहि रोती॥ १
उतते आयो भजन करन को : राह धरन सत नोती।
इत आए निज धर्म्म गंमायो : गायो दोसर गोती॥ २
धर्म्म करन में मनहु न लागे : पाप करन अति होती।
सज्जन जनते बैर बढ़ायो : दुर्जन तें बहु मोती॥ ३
केतो करों प्रभु बनि नहि आवे : देहु सुबोध अधोती।
जान अधम नर लिजिहैं कैसे : बिषय बासना जोती॥ ४

१८०

मन मन्दिर आए प्रभु योशु : कोजे अपनो बासा जो॥
यहो अपावन मन्दिर माझे : शत्रु न डाखो पासा जो।

प्रभु तुम ताको काटि दुरावो : दिखाय दंडक त्रासा जी ॥ १
चौदिश घेरे विषय बिरोधी : मन बच काया ग्रासा जी।
काह करों किछु सूझत नाहीं : तेरो त्राणक आशा जी॥ २
जोग न जौं पैहों प्रभु तेरो : करहु दया प्रकाशा जी।
बिपत्ति सह्यो तुम दुःखितन कारण : मेरो यही दिलासा जी॥ ३
और करो मति मोर परीक्षण : छनिक भरे यहि श्वासा जी।
केते पतितन तुम तार्यो प्रभु : जानहु तेरो दासा जी॥ ४

१८१

आ जा मसीहा तू दिलमें हमारे : अपने लहूसे धो पाप हमारे॥
बिगड़ गये हम तन और मनसे : तुझ बिन कौन सुधारे।
पाप की अग्नि बहु दुख दाई : जल बल भष्म कर डारे॥ १
लोभ मोह अहंकार ने योशु : बस कर लिया संसारे।
हम से पापी को कौन बचावे : तुझ बिन नाहीं कोई हमारे॥ २
तीसरे दिन जब उठे क़ब्र से : शिष्यन से बतराये न्यारे।
चेले सब घबड़ा के बोले प्रभु जी : दरशनको हम आये तुम्हारे॥ ३
जीवन हांक कह्यो सब जग में : जीव बचे बिश्वासी तुम्हारे।
असद हम सब दास तुम्हारे : मुक्ति हमारी है चरण तुम्हारे॥ ४

१८२

तुम बिनु कौन रखे यही बेरी

मन अति व्याकुल कम्पित गाता : दुरगति गति भौ मेरो।
नाहिन सूझत आन उपाये : चौं दिश आए हेरो॥ १
नूह बचायो नाव चढ़ाए : डूब्यो मही जल सेरी।
उदधि उतारयो निज दल पैदल : अरि दल जब तेहि घेरी॥ २
बरत अग्नि से तुम तिहुँ जनको : काढ़ि लियो भुज फेरी।
केहरि मुखतें दानियल खैंचयो : प्रेम अकथ इमि तेरी॥ ३
प्रभु तुम केते बार सहाये : पड़े जननि जब बेरी।
जान अधम अब आये द्वारा : बिपति सुनावत टेरी॥ ४

१८३

दीनदयाल सकल बर दाता : दे यश गावनको उपदेशा ॥
निथरे नीर अगम नद नाई : तीर दया जल बहत हमेशा १
वातें तनमन कुशल मिलत है : धन्य जगत पालक परमेशा ।
शठ अपराधी नर तारन को : सेवक का प्रभु लियो भेशा २
दीनन संग संकट पथ धारा : क्रूश सहित सहि लाज कलेशा ।
निज जन अन्तर बिमल करनको : है प्रभु तोहे शक्ति विशेशा ३
तोर आत्मा गुन तिन चित्त में : दिवस जोत सम करत प्रवेशा ।
तब यश मिरत भुवन में होवे : सरग भुवन जिमि होत अशेशा ४
आश्रित सुख निज भजन कराओ : टारि कुटिल मन दुर्मति लेशा ॥

१८४

हमारा मन लागा योशू जी के चरणन ॥

कोई पहिरे कंठी माला : कोई तिलक लगावे जी ।
कोई गले में सेली पहिरे : कोई गलेमें तागा जी ॥
कोई अंग भभूत लगावे : कोई ओढ़े मृगछाला जी ।
कोई काला कम्बल ओढ़े : कोई फिरत है नागा जी ॥
कोई पूजे देवी देवा : कोई गंग नहावे जी ।
कोई पीपर पानी छोड़े : कोई जिमावे खागा जी ॥
कोई बन बन तीर्थ भरमें : कोई बांह सुखावे जी ।
कोई पंच अगिनको तापे : देख भरम में भागा जी ॥
प्रभु दास बिनवे कर जोरे : सुन बालक नर नारी जी ।
योसू मसीह जु दया कीन्ही : भरम नींद में जागा जी ॥

१८५ ,, खेमटा ॥

मेरे मन यही तार प्रभु को भरोसा भारी ॥

नबुखदनज़र साठि हाथ को : निज मूरति परचार।
जबही बाजे बाजन लागे : तुरतहि जैजै पुकार।
मेरे देव की पूजा कर लो : बचन सुने सब झार।
देव प्रतिष्ठा जो नहि करिहै : प्राण से जैहै मार॥
अबदनजू और सदरक मीसक : ठाढ़ करें सुबिचार।
चाहै प्राण रहै चहै जावै : करब न देव पुजार॥
राज सुनी जबही अस बाता : क्रोध हृदय अतिधार।
मेरे हाथ से तोहि बचावै : देखूं कौन तुहार॥
अति बीरन को आज्ञा दीनी : जलत तंदूर में डार।
अग्नि बीच प्रभु रच्छा कीनी : जरत न एको बार॥
दानिएल को मंत्रिन दारा : सिंहन डार मझार।
सिंहन से प्रभु दास की रच्छा : करि मंत्रिन को मार॥

१८६ गीत ठुमरी।

भूतल भार उतारने : यीसू जग आए रे।

दाऊद कुल नर जन्म लियो : यीसू नाम धराये रे।
जौं लगि प्रगट न भये रहे : तौलगि सरल सुभाये रे॥
तीस बरस के जब भये : सब से बतराए रे।
आवनहार जो जग हतो : सो निकट सुहाए रे॥
द्वादस शिष प्रभु ने किये : संगै लिये धाए रे।
ग्राम ग्राम प्रभु जायके : सबही समुझाए रे॥
अंधन को आंखें दईं : पंगुल पग पाए रे।
कोढ़िन को काया दई : मृतकहुं जिलाए रे॥
जन्म के गूंगे जो हते : बोले शब्द सुहाए रे।
जितने रोगी जो हते : मन हर्ष मनाए रे॥

इतने चरित प्रभु ने किये : जो लेख न जाए रे।
मुक्ति हमारी के कारने : शुभ प्राण गमाए रे॥
तीन दिना रहिके कबरि : आपहि उठि आए रे।
चालिस दिन जग में रहे : फिर दिवमें बिलसाए रे॥
जो प्रभु यीशु मसीह भजै जग : सोइ धन्य कहाए रे।
नाहीं तो शोक अपार पड़े : प्रभु के फिर आए रे॥

१८७

तुम तो मसीहा मेरी आंखों के तारे : भूलो न मोरी ख़बरिया॥
राह बाट हम भूले फिरत हैं : पाप की भारी गठरिया।
हाय हाय कहत तेरी बिन्ती करत : मसीह अपनी बता दो डगरिया
पाप की नदिया गहरी बहत है : लोभ की उठत लहरिया।
ले चल खेवनहार मसीहा : मोरी तो टूटी नवरिया॥ २
कबहु सोवें महल दो महला : कबहु ऊंची अटरिया।
रहियो शाफ़ी मसीहा मोरे : जब तक हम सोवें क़बरिया॥ ३
मनकी चादर मैली जो हो गई : जैसे कि कारी बदरिया।
अपने रक्त में धो दे मसीहा : मन की यह मैली चदरिया॥ ४
यह शैतान बड़ो दुखदाई : मारत है मिलके कटरिया।
साबिर के औगुन छिपा बचा मसीह : तेरी तो प्यारी नज़रिया ५

१८८

Morning Hymn

१ अब अंधेरा गया है : फिर उजाला आया है
मेरा मन उजाला कर : प्रभु मन को प्रेम से भर।
२ पापकी इच्छा आज जो हो : शक्ति दे नाश करने को
ईसा तू सहारा दे : कि मैं बचूं पापों से।

३ मन के बुरे सोच मिटा : मुझे जोखिम से बचा
कभी मुझे तू न छोड़ : अपना मुंह न मुझसे मोड़।

४ आवेगा जब मरन काल : मुझ बलहीनको तब संभाल
प्रभु तू है कृपामय : हो उस काल तू मृत्युंजय।

१८९

Come to the Saviour make no delay.

१ आ देर न करके योशु के पास
अब उसकी बात पर लाके विश्वास
यहां वह करता बीच में निवास
अभी पुकारके आ।

कोरस— जय जयकार हम तभी करेंगे
पाप से जब हम छुट्टी पावेंगे
और तेरे साथ हम नित्य होवेंगे
स्वर्गीय मकानों में।

२ लड़के भी आवें सुन उसकी बात
धन्य उसे होवे हर दिन औ रात
योशु को मानें सब देश और जात
अब देर न करके आ।

३ योशु को बीच में अब पहचान
सुन उस की बात और मन ही से मान
प्रेम से वह बोलता दे तेरा कान
आ मेरे लड़के आ।

१८० गीत ॥

Evening Hymn.

१ काम से उठाता हूं : सोने को मैं जाता हूं
ईश्वर पिता स्वर्गबासी : मेरे ऊपर रख दृष्टि ।

२ चूक जो हुई हे पिता : आजके दिन सो कर क्षमा।
लोहू योशु का जो है : सब पापों से धोता है ।

३ घरके लोग सब अपने साथ : सौंपता हूं मैं तेरे हाथ
छोटे बड़े सभों का : योशु तू हो रखवाला।

४ दे आराम बिमारों को : शान्ति दे दुःखियों को
मरने काल तू दया कर : ले हम सबको अपने घर।

१८१

Whither Pilgrims are you going

१ किधर जाते यात्री लोगो : किधर जाते किये भेश ।
जाते हम एक दूर की यात्रा : पाया राजा का आदेश ॥
जंगल पर्वत दु.ख उठाते : उसके भवनको हमजाते ।
जाते हैं एक उत्तम देश : जाते हैं एक उत्तम देश ॥

२ क्या पावोगे यात्री लोगो : जाके दूर के उत्तम देश ।
उजले बस्त्र तेजके मुकुट : प्रभु देगा प्रेम बिशेश ॥
निर्मल अमृत जल पिवेंगे : ईश्वर पास हमेश रहेंगे ।
जावें जब उस उत्तम देश ॥

३ छोटा झुँड हो तुम न डरते : कठिन मार्गमें सूने देश ।
नहीं पासहैं दोस्त अनदेखे : स्वर्गी दूत टाल देते क्लेश ॥
ईशा स्वामी साथ चलेगा : रक्षक अगुआ आप रहेगा ।
जाने में उस उत्तम देश ॥

४ यात्री लोगो हम भी साथ हो : चलें उज्जल उत्तम देश ।
आओ सही भले आये : बीच हमारे हो प्रवेश ॥
आओ संग न छोड़ो कभी : ईशा नाथ तैयार है अभी
लाने को उस उत्तम देश ॥

१८२

While Shepherds watched their flocks by night.

१ गड़ेरिये जब भेड़ों को : रात में चरा रहे
एक दूत तो बीचमें उतरा : साथ बड़े बिभवके ।

२ घबराओ मत उसने कहा : मैं करने को प्रचार
अब आया हूं सब लोगोंको : बड़ा सुसमाचार ।

३ तुम्हारे लिये जन्मा है : दाऊद के कुल होसे
एक त्राणकर्त्ता आजके दिन : तुम उसे देखोगे ।

४ एक बालकको तुम पाओगे : दाऊद के नगरमें
कपड़े में लिपटा हुआ है : और पड़ा चरनीमें ।

५ जब यूंही बोला उसके संग : अचानक आये थे
दूत बहुतेरे जो यह गीत : आनन्द से गाते थे ।

६ गुणानुबाद हो ईश्वर का : और जगपर शांति भी हो
प्रसन्नता मनुष्यों पर : अभी और सदा को ।

१९३ गीत।

Marriage Hymn.

१ जब पहिला बिवाह हुआ : अदन में ईश्वर ने
आशीष की बातें कहीं : आदम और हव्वा से।
२ यों अब हमारे बीच के : बिवाह में ईश्वर है
और आशीष देने चाहते : तेजवान पवित्र त्रय।
३ यह दुलहिन तू हे पिता : दूलहे के हाथ में दे
जैसे कि पत्नी दी थी : आदम को तू ही ने।
४ हे यीशु इनके हाथ और : हृदय भी अब तू जोड़
औरदुखसुखरोगआरोग्यमें : न इन्हें कभी छोड़।
५ और हे पवित्र आत्मा : तू उनपर उतर आ
कि प्रीत और मेलके साथ ये : मिलके रहें सदा।
६ बुराई से बचा के : इन का सहायक हो
और अपने स्वर्गीय राज्य में : दे जगह दोनों को।

१९४

God is a Spirit.

१ परमेश्वर कौन और कैसा है : कौन उस का जाननेहार,
वह न मनुष्य के ऐसा है : वह आत्मा है अपार।
२ न अंग न रंग न रूप न रेख : है ओ परमेश्वर की,
पर उसके सत अवतारको देखो : प्रभु यीशु है वही।
३ परमेश्वर का तुम देखो प्रेम : जो प्रगट किया है,
कि जग को देने कुशल क्षेम : पुत्र अपना दिया है।
४ यूं ईश्वर प्रेम की जोत अपार : जग को चमकाता है,
मिटाता है वह सब अंधकार : और मुक्त सुझाता है।
५ हे ईश्वरपुत हे दीनदयाल : जो धारी तू ने देह,
मसीहा तू बचानेवाल : दिखाता कैसा स्नेह।

१९५ गीत।

Harvest Festival.

१ धन्य हमारा ईश्वर है : हर एक उसकी स्तुति गाए।

कि सनातन और निश्चय
उस की दया रहती है ।

२ धन्य कि हमें उसने दी : प्रति दिन ज्योति सूर्य्य की।
३ धन्य कि उसने चांद दिया : रात पर करने प्रभुता।
४ धन्य जो मेंह बरसाता है : जिससे पक्का अन्न हो जाय।
५ उसकी बात से हरएक खेत : फलवन्त है हमारे हेत।
६ धन्य कि पूंजी अन्न की : खलिहान में उसने दी।
७ धन्य कि भोजन स्वर्गीय : हमें मिलता उसी से।
८ धन्य है ईश्वर का प्रशाद : करो उसका धन्य बाद।

१९६
Sunday *Morning* Hymn

१ पूर्ण हुआ छः दिन का काम : आया है अब दिन बिश्राम
पावत सबत रबिबार : तेरी सोभा क्या अपार
२ मन से दूर हो हे संसार : तुझे मैं न करता प्यार
हे मसीह मन तेरा घर : सदा इस में रहा कर।
३ बिन्ती करने तू सिखा : भक्त और मुक्त का मार्ग दिखा
बचन में ठहरने को : आशिस दे हम सभों को।
४ हे धर्म्मात्मा जीवन सत : जो है मेरे प्राण का पथ
मेरे मन में हो प्रकाश : पूरी कर दे दास की आश।

१८७ गीत॥

A Child's Prayer to Jesus.

१ मसीहा मैं लड़का हूं क्या हो गरीब
मसीहा तू लड़कों का प्यारा हबीब
मसीहा मुझ छोटे पर हो तू रहीम
मसीहा दे मुझे नजात की तालीम।
२ मसीहा तू मुझ में जल्द रहने को आ
मसीहा तू दिल मेरा नया बना
मसीहा राह हक्क पर तू मुझे चला
मसीहा दीन्दारी में मुझे बढ़ा।
३ मसीहा हर वक्त रह मुझ लड़के के साथ
मसीहा तू मुझपर रख बरकतका हाथ
मसीहा सब आफत से मुझे बचा
और आखिरको मुझे आस्मानपर बुला।

१९८

This is the day of light.

१ यह ज्योति का दिन तो है : ज्योति हो हम लोगों पर
हे प्रभु आज ही हो उदय : अंधेरा दूर तो कर।
२ यह दिन बिश्राम का है : बल नया हमें दे
मनचिन्तितव्याकुल थकाहै : शांति मिले तुझ ही से।
३ यह मेल का दिन भी है : मेल अपना हम में भर
सबफूटऔरझगड़ाहोवेंक्षय : समाप्त तू उन्हें कर।
४ यह दिन है प्रार्थना का : मन आदरकारी दे
तू हमें अपनी ओर उठा : और भेंट हो तुझी से।
५ यह सब से उत्तम दिन : यह तेरा बिश्रामवार
बिश्राम न होगा तेरे बिन : हे मेरे प्राण आधार।

१९९ गीत

Evening Hymn.

१ सांझ है हे प्रीतम यीशु खीष्ट : तू किधर जाता मेरे इष्ट
हे कृपासिन्धु दया से : मेरे हृदय में डेरा ले।
२ सुन मेरी बिन्ती परम हित : तुझी में है सब मेरी प्रीत
हे उत्तम पाहुन हर एक जाम : मनमेरा सिध्रहै तेराधाम।
३ दिन बीता अंध्यार चहुंओर : रातआती है जोअतिघोर
मुझे मत त्याग हे सत प्रकाश : जो तेरा शरणागत दास।
४ धर्म्म सूरज मिटा पापकी रात : न खाऊं ठोकर मार्गमें जात
उदय कर मेरे मन में यूं : कि स्वर्ग के पथ से न भटकूं
५ निदान मृतकाल के आपत से : मुझे निकाल सुमृत्यु दे
हे यीशु खीष्ट रह मेरे संग : कि मैं हूं तेरे देह का अंग।

२००

For the New Year.

१ हल्लिलूयाह प्रभु मेरे : तेरा धन्य मैं मानता हूं
फिर एक साल अनुग्रह तेरे : जीवन में मैं रहा हूं।
२ जो कुछ तेरी ओर से आया : मेरे लिये भला था
दुख और सुख जो मैं ने पाया : तेरा दान था हे पिता।
३ क्षमा कर हे कृपासागर : जितने मेरे दोष अपराध
तू ही है सकल गुणसागर : तेरी दया है अगाध।
४ नये साल में मेरी सुध ले : दिन दिन प्रीतम प्राणकेनाथ
रक्षा कर और कुशल चैन दे : सदा रह तू मेरे साथ।
५ दिन और साल तो बीतते जाते : तू हे ईश्वर अचल है
आदम जात सब मरते जाते : तू ही अटल रहता है।
६ अपना शरण नये साल में : तुझी को ठहराया है
जीते मरते दुःख और सुखमें : यीशु मेरी आशा है।

२०१ गीत

Harvest Festival.

१ हम जोतते हैं और बोते : ज़मीन पर बीज बार बार
पर बरकत के हम होते : खुदा के उम्मेद वार।
वह ओस और मेंह बरसाता : ता खेत को नरमी हो
वह हवा को चलाता : और भेजता गरमी को॥

सारी अच्छी बख़्शिश : आसमान से आती है
पस शुक्र हो हां शुक्र : हो खुदावन्द को

२ चांद सूरज और सितारे : और सारी मौजूदात
जो गिरदा गिर्द हमारे : है उसके मख़लूक़ात।
अनाज और सब आधार को : वही बनाता है
इनसान और सब जानदार को : वही खिलाता है॥

३ पस तुझे बाप आसमानी : हो शुक्र ओ सिपास
कि तेरी मिहरबानी : बे हद्द है बे क़ियास।
बआजिज़ी हम आते : अब तेरे पाक हुज़ूर
क़ुर्बानी जो हम लाते : सो तुझे हो मनज़ूर॥

२०२

Harvest Thanksgiving

१ हे दयासागर कृपामय : हैं कितने तेरे दान
हर ऋतु सुना देती है : प्रेम तेरे का बखान।

२ भूमिमें जब बोनेहारे ने : बीज बोके डाला था
तब उसे देख के दया से : तू मेंह बरसाता था।

३ जब तूने दिया था बसन्त : तब अंकुर निकले
और तू ने दयासे अनन्त : धूपकाल और ओस दिये।
४ इन सब दानों के द्वारासे : पक गया है अनाज
खाने के लिये सभों के : है बहुतायत आज।
५ बोना और काटनाठंडतपन : हैं तेरी ओर से सब
तू पोषणकरताहरएक जन : यह प्रेम हम भूलें कब।
६ हम तेरी स्तुति करें जो : है प्रेमी अतिशय
और सारी सृष्टि तुझी को : धन्य कहे हर समय।

२०३

God Save the King

१ श्री राजा जार्ज की जय
उनका राज हर समय
हम पर रहे
उनकी पवित्रता
चैन सुख और महिमा
आनन्द अब और सदा
हे ईश्वर दे॥

* परमेश्वर की दस आज्ञाएं *

१ मेरे सिवाय दूसरों को परमेश्वर करके न मानना ॥
२ कोई मूर्ति न खोद लेना और (जो कुछ आकाशमें वा पृथिवीपर वा पृथिवीके जल में है उसका स्वरूप न बनाना) ऐसी वस्तुओंको दण्डवत न करना न उनकी उपासना करना (क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जल उठनेहारा ईश्वर हूं और जो मुझसे बैर रखनेहारे हैं उनमें पितर के अधर्म का दण्ड उन के बेटों बल्कि पोतों और पर पोतों को भी दिया करता हूं और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को पालते हैं उनकी हजारों पीढ़ियों लों मैं उन पर करुणा करता रहता हूं ॥
३ मुझ अपने परमेश्वर यहोवा का नाम झूठी बात पर न लेना क्योंकि जो मुझ यहोवा का नाम झूठी बात पर लेवे उसको मैं निर्दोष न ठहराऊंगा ॥
४ बिश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना छः दिन तो परिश्रम करना बल्कि अपना सारा कामकाज करना पर सातवां दिन मुझ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये बिश्राम का दिन है उस में न तो तुम किसी भांती का काम काज करना (न तुम्हारे बेटे न तुम्हारी बेटियां न तुम्हारे दास न तुम्हारी दासियां न तुम्हारे पशु न कोई परदेशी भी जो तुम्हारे नगरों में हो क्योंकि छः दिन में मुझ यहोवा ने आकाश और पृथिवी और समुद्र और जो कुछ उसमें है सब को बनाया और सातवें दिन बिश्राम किया इसी कारण मुझ यहोवा ने बिश्रामदिन को आशीष दिई और उसको पवित्र ठहराया ॥
५ अपने पिता और अपनी माता का आदर करना जिसतें

जो देश मैं तुम्हारा परमेश्वर यह्वोवा तुम्हें देता हूं उस में तुम ढेर दिनलों रहने पाओ ॥

६ मनुष्य हत्या न करना ॥

७ व्यभिचार न करना ॥

८ चोरी न करना ॥

९ अपने भाईबंधु के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना ॥

१० अपने भाईबंधु के घर का लालच न करना न तो अपने भाईबन्धुकी स्त्री का लालच करना न उसके दास दासी वा बैल गदहे का निदान अपने भाईबंधु की किसी वस्तु का लालच न करना ॥

इन आज्ञाओं का सार ॥

तू परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे और अपने सारे प्राण से और अपने सारी शक्ति से और अपने सारी बुद्ध से प्रेम कर और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर ॥

प्रभु की प्रार्थना ॥

१ हे हमारे स्वर्गवासी पिता,

२ तेरा नाम पवित्र किया जाय,

३ तेरा राज्य आवे,

४ तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथिवी पर पूरी होय,

५ हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे,

६ और जैसे हम अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं तैसे हमारे ऋणों को क्षमा कर,

७ और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा,

८ [क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं,]

आमीन मत्ती ६:९-१३

धन्य कौन हैं

१ धन्य वे जो मन में दीनहैं ।
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हींका है ॥
२ धन्य वे जो शोक करते हैं ।
क्योंकि वे शांति पावेंगे ॥
३ धन्य वे जो नम्र हैं ।
क्योंकि वे पृथिवीके अधिकारी होंगे॥
४ धन्यवे जो धर्मके भूखे और प्यासे हैं ।
क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे ॥
५ धन्य वे जो दयावन्त हैं ।
क्योंकि उनपर दया किई जायगी ॥
६ धन्य वे जिनके मन शुद्ध हैं ।
क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे ॥
७ धन्य वे जो मेल करवैये हैं ।
क्योंकिवे ईश्वरके सन्तान कहावेंगे ॥
८ धन्यवेजो धर्मके कारण सताये जाते हैं
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है ॥
मत्ती ५: ३-१०

यीशु मसीह की पहिली आज्ञा ॥
१ पश्चताप करो और सुसमाचार पर बिस्वास करो
मत्ती ४: १७ मार्क १: १५
यीशु मसीह की पिछली आज्ञा ॥
तुम जाके सब देशोंके लोगों को शिष्य करो और उन्हें पिता औ
पुत्र औ पवित्र आत्मा के नाम से बपतिसमा देओ ·

प्रेरितों का मत संग्रह।

१ मैं बिश्वास रखता हूं स्वर्ग और पृथिवी का सृजनहार सर्बशक्तिमान परमेश्वर पिता पर।

२ और उसके एकलौता पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट पर।

३ जो पवित्र आत्मासे गर्भमें पड़ा कुवांरी मरियमसे उत्पन्न हुआ पन्तिय पिलात के अधिकार में दुःख उठाया।

४ क्रूशपर चढ़ाया गया, मर गया, और गाड़ा गया, परलोक में उतरा।

५ तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा।

६ स्वर्गपर चढ़ गया और सर्बशक्तिमान ईश्वर पिताके दहिने हाथ पर बैठा है।

७ जहां से वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने को फिर अवेगा।

८ मैं बिश्वास रखता हूं पवित्र आत्मा पर।

९ पवित्र सर्बमय मंडली पर पवित्र लोगों की संगति पर।

१० पाप की क्षमा।

११ देह का पुनरुत्थान।

१२ और अनन्त जीवन पर आमीन।

गीत। नम्बर।

सूचीपत्र

भूल—तुम हमपर कृपा —१२२
धर्म्मआत्मा तू ने —१३१

सूचीपत्र— मतलब के अनुसार ॥